भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **फरवरी** 2009 | **अंक** 2

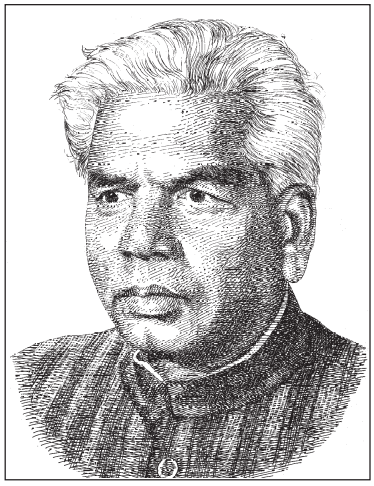

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

(जन्म : 4 जून 1924, अवसान : 4 जनवरी, 2009)

'कुकुढ़ा' में जन्मे मगर, गोरखपुर-प्रवास।
सूर्योदय ने दे दिया, था दिन का आभास॥
पढ़े-बढ़े वाराणसी, फिर लखनऊ-निवास।
श्रम-सीकर बहता रहा, बढ़ता रहा उजास॥
'एम०पी०' में शिक्षक हुए, सन बावन के वर्ष।
सन् अट्ठावन में हुआ, गुरुवर का उत्कर्ष॥
अद्वितीय शिक्षक बने, जिसकी नहीं मिसाल।
दिल-दिमाग दोनों बड़े, था व्यक्तित्व विशाल॥
जीवन में आगे बढ़े, घोर तमस को चीर।
इसीलिए हरते रहे, दीन जनों की पीर॥
सदा कर्मरत रहे वे, निशि-दिन आठों याम।
जीवन-जगत-प्रपंच से, पूर्णतया निष्काम॥
आलोचक कितने बड़े, जाने यह संसार।
केवल विद्या-साधना, शेष सभी निस्सार॥
गौरव गोरखपूर के, राष्ट्रीय पहचान।
शिक्षक-आलोचक-मनुज, विपुल मिला सम्मान॥
घर में केवल चार हैं, मानस-पुत्र अनेक।
ऐसे-वैसे ही नहीं, कहीं एक-ते-एक॥
अपने ही तप से मिला, मान-सुयश-धन-धाम।
पढ़ने-लिखने के सिवा, और न दूजा काम॥

शेष पृष्ठ 2 पर

राम राम कहि राम कहि,
राम राम कहि राम...!

महाप्रयाण की ओर संकेत करते हुए ये सरल और गहन गूढ़ शब्द डॉ० रामचन्द्र तिवारी के मुँह से निकले और कुछ क्षण के सन्नाटे के बाद वे खिलखिला उठे। पिताश्री (स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी) ने यह संकेत समझा, मुस्कराये और हँसते हुए बोले 'भाई, क्या फर्क पड़ता है—नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि...!'

सम्बन्धों के इतिवृत्त में उम्र के शिखर पर खड़े दो अभिन्न मित्र मृत्यु से परिहास कर सकते हैं, उसे तरह देकर, आगे-पीछे निकल सकते हैं। मगर हम तो रिक्त हो जाते हैं, एक शिखर के गिरते ही दूसरा भी कालक्रम से धराशायी हो जाता है और लगता है कि जैसे आधार-भूमि खिसक गयी हो। पिताश्री के अवसान के बाद संवेदना के उनके शब्द याद आते हैं—''आज मोदीजी नहीं हैं। 1952 से सन् 2007 तक का साथ कम नहीं होता। मुझे लगता है, जैसे मेरी एक भुजा कट गयी। मैं लगभग 84 वर्ष का हो रहा हूँ। कब क्या हो जाय, ठीक नहीं। मेरा एक ही आग्रह या अनुरोध है कि उन्होंने जो परम्परा कायम की है, उसका निर्वाह करना।'' पिताश्री के लिए डॉ० रामचन्द्र तिवारी की भाव-प्रवण संवेदना और हमें कर्त्तव्य की ओर प्रेरित करने का यह बड़प्पन, घर का कोई बुजुर्ग ही निभा सकता था और कहना न होगा कि डॉ० तिवारी हमारे परिवार के ही वरिष्ठ सदस्य थे।

इस साल, नये वर्ष की गहमागहमी के बीच, जनवरी के पहले सप्ताह में ही, 4 जनवरी की दोपहर में बड़े भैया (श्री अनुराग मोदी) के मोबाइल पर डॉ० तिवारी के देहावसान की सूचना मिली। कुछ क्षणों के लिए हम सभी सन्न रह गये। अवसाद के इन्हीं क्षणों में भैया ने गोरखपुर जाने का निर्णय किया और मैं स्थानीय कार्य-दायित्व के बावजूद खो गया स्मृतियों के अन्तराल में। आँखों के सामने गुज़रने लगे बचपन से अब तक के सारे सम्बन्ध-चित्र। हम बच्चों के सिर पर हाथ रखते, मुस्कुरा कर प्रगति पूछते, कहानियाँ गढ़ते-सुनाते और पीठ थपथपाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते। डॉ० तिवारी जीवंतता के पर्याय थे। मेरा बचपन उनसे कहानियाँ सुनते ही बीता। इसी मनो-मंथन में मन नहीं मान रहा था कि आज वे नहीं हैं। अचानक मेरी नज़र उनकी कृतियों पर पड़ी, जिसे उलटते-पुलटते मुझे याद आने लगी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता 'सोनारतरी', जिसका भावार्थ है कि ''महाकाल किसी को नहीं छोड़ता। वह व्यक्ति का, जो कुछ कालजयी कृतित्व होता है, उसे ही अपने मस्तक पर वहन करता है।'' मैं एक-एक कर डॉ० तिवारी की किताबों से रू-ब-रू होता रहा। मेरी आँखों के सामने जीवंत ही तो थे डॉ० रामचन्द्र तिवारी और उनके शब्द, जो अपनी नश्वर-काया छोड़कर परम्परा के लिए अर्थ-छाया छोड़ गये हैं।

शब्दार्थ-सम्बन्धों की इसी परिधि में हमारे स्व० पिताश्री और डॉ० तिवारी की

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

सूना कर के गये वे, अपना खास मुकाम।
ईश्वर करे भरे कोई, ले-ले उनका नाम॥
कभी न कोई प्रार्थना, कभी न कोई ध्यान।
केवल अक्षर साधना, करना अनुसन्धान॥
कबिरा सा जीवन जिए, वाणी वही कबीर।
करनी थी आचार्य की, रहनी मस्त फकीर॥
रामचन्द्रजी शुक्ल थे, गुरुवर के आदर्श।
रखकर उनको सामने, स्वयं बने प्रतिदर्श॥
सन्तों जैसी सरलता, नैतिकता उत्कृष्ट।
इसीलिए वे हो सके, मानव परम विशिष्ट॥
पढ़ते-लिखते-सोचते, देते रहे विमर्श।
गुरुवर ने प्रतिपल किया, शिष्यों का उत्कर्ष॥
जो भी बैठा सामने, पाया अमृत दान।
समझा उनको सभी ने, साहित्यिक प्रतिमान॥
कर्मकाण्ड जाने नहीं, किए न कोई धाम।
पढ़ना-लिखना-बोलना, चिन्तन-क्रम अविराम॥
सन् नौ के नव वर्ष में, दे संदेश महान।
ज्ञान-साधना है बड़ी, गुरुवर का प्रस्थान॥
निश्छल सहज पुनीत मन, जा बैठे वैकुण्ठ।
सदा उन्हें देखा गया, अल्हड़ और अकुंठ॥
'राजघाट' से लौटकर, मन हो उठा अधीर।
गुरुवर मुँह मोड़े गये, आज दिखे बेपीर॥
विद्यापुत्रों से भरा, आज देख श्मशान।
अनुभव भीतर ये हुआ, श्रद्धा सर्व महान॥
कभी न भूलेगा कोई, बिसुरेगा सौ बार।
गुरुवर करनी आप की, यह कृतज्ञ संसार॥

—डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय, गोरखपुर

सारस्वत साधना के शिखरपुरुष आचार्य रामचन्द्र तिवारी

जन्म : 4 जून, 1924
जन्मस्थान : ग्राम-कुकुढ़ा, जनपद-वाराणसी
अवसान : 4 जनवरी, 2009
शिक्षा : हाईस्कूल—प्रथम श्रेणी : हरिश्चन्द्र हाई स्कूल, वाराणसी (वर्ष 1943); इंटर : कान्यकुब्ज कॉलेज, लखनऊ (1945); बी०ए० : लखनऊ विश्व-विद्यालय, लखनऊ (1947); एम०ए० : लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान (1949); पी-एच०डी० : लखनऊ विश्वविद्यालय (वर्ष 1956)—'शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य'।

अध्यापन

महाराणा प्रताप कालेज, गोरखपुर (वर्ष 1952-1958); गोरखपुर विश्वविद्यालय (वर्ष 1958-1984)

शेष पृष्ठ 4 पर

पृष्ठ 1 का शेष

अभिन्न मैत्री को समझा जा सकता है। गोरखपुर के पैतृक आवास में पिताश्री का पुस्तकीय व्यवसाय और फिर 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' की स्थापना, दोनों से ही वे जुड़े रहे। डॉ० तिवारी की अधिकतर या लगभग सभी पुस्तकें हमारे यहाँ से ही प्रकाशित हुईं। हिन्दीभाषा, साहित्य, आलोचनात्मक ग्रन्थों की सतत सर्जना करते हुए डॉ० तिवारी को विभिन्न अकादमिक प्रतिष्ठानों ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। किन्तु उनका कृति-व्यक्तित्व इन सम्मानों की तुलना में काफी बड़ा है। ऐसे मनीषी साधक, चिन्तक, आचार्य डॉ० रामचन्द्र तिवारी का अवसान 'भारतीय वाङ्मय' परिवार की व्यक्तिगत क्षति है। उनका 'होना' जहाँ साहित्यालोचन को नवीन उद्भावनाओं से समृद्ध कर रहा था वहीं हमें नित नया निर्देश और लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता रहा। आज उनका 'न होना' हमारे लिए एक ऐसा अभाव है जो हमेशा सालता रहेगा। पिताश्री के 'न होने' के बाद अचानक ऐसा लगा कि हम दुबारा अनाथ हो गये। इस शून्य की भरपाई तो काल-सापेक्ष ही है। समय के धारा-प्रवाह के बीच हिन्दी-भाषा और साहित्य के आध्यात्मिक साधक डॉ० रामचन्द्र तिवारी को समर्पित है 'वाङ्मय' की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि...!

राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ, राउ गयउ सुरधाम॥

■ ■ ■

सर्वेक्षण

कैसी विडम्बना है कि 21वीं सदी से कदमताल करते हुए भी हम आज तक परिपूर्ण शिक्षा-नीति का गठन नहीं कर सके? लोकतंत्र में आती-जाती सरकारों की आपाधापी के बीच दाँव पर लगा होता है देश का वर्तमान और भविष्य, जिसे वे सभी अपने-अपने मानदण्डों और नीतियों से संचालित करना चाहते हैं। नतीजा यह होता है कि समूचा शैक्षणिक ढाँचा ही चरमरा कर रह जाता है। शिक्षा का गुणात्मक विकास होने के बजाय सापेक्षिक ह्रास आरम्भ हो जाता है। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश की सरकार ने उच्च शिक्षा- नीति के निर्माण की कवायद शुरू की है जो प्रशंसा योग्य है। किन्तु इसके नीति-निर्माताओं को ध्यान रखना होगा कि उच्च शिक्षा के केन्द्र विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता में प्रगति हो, राजनयिक प्रभावों से शिक्षा-सत्र प्रभावित न हो और विश्वविद्यालय सिर्फ डिग्री-वितरण का उत्तरदायित्व निर्वहन करनेवाले शोभा-संस्थान बन कर न रह जायें। शैक्षणिक नीति के सम्यक् नियमन और अनुशासन के बीच ही अपना लक्ष्य हासिल कर सकेंगी वर्तमान और भविष्य की हमारी पीढ़ियाँ!

■ ■ ■

उत्तरायण

आकाश में सूर्य की संक्रान्ति के साथ धरती पर प्रकृति का भी पट-परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। हिम-तुषार-आवरण के हटते ही कमल खिलते हैं, महमह कर उठती हैं केशर-क्यारियाँ, वन-उपवन खिलखिला उठते हैं। मृत्यु पर जीवन की विजय का उद्घोष करते हुए ऋतुराज का आगमन होता है और रंग-बिरंगे फूलों के साथ हम वसन्त का स्वागत करते हैं। इस शाश्वत नवोन्मेष की शुभाशंसा में शारदीय वीणा झंकार भरती है और गा उठता है कविकंठ—

नवगीत, नवलय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव-जलद-मंद्र-रव,
नव-नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर नव स्वर दे...!!

—परागकुमार मोदी

साथ-साथ चली जीवन-यात्रा

मैं जब रामचन्द्र तिवारी को देखता हूँ और याद करता हूँ तो अपने को ही देखने लगता हूँ। 1949-50 में हिन्दी से एम०ए कर 1950-51 में मैंने प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ किया। शुरू किया डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की संस्कृत व्याकरण की पुस्तकों से। 1952 में रामचन्द्र तिवारी गोरखपुर आये महाराणा प्रताप कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता पद पर। उनके गोरखपुर आने से विश्वविद्यालय प्रकाशन कार्य को नयी दिशा मिली। एम०ए० में मैंने सेनापति का 'कवित्त रत्नाकर' पढ़ा था, उस पर कोई समीक्षात्मक पुस्तक नहीं थी। तिवारीजी लखनऊ से आये जहाँ मिश्रबन्धुओं का प्रभाव था और रीतिकाल का अध्ययन विशेष रूप से होता था। श्री तिवारी को रीतिकाल की अच्छी समझ थी। मेरे आग्रह पर उन्होंने 'रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति' शीर्षक सुलझी हुई समीक्षात्मक पुस्तक लिख दी। मैंने उसका प्रकाशन किया। पुस्तक थोड़े समय में ही समाप्त हो गयी। इसके बाद से ही उनके हमारे सम्बन्ध प्रगाढ़तर होते गए और मैं एक के बाद एक उनकी कृतियाँ प्रकाशित करता गया। 1955 में 'हिन्दी का गद्य साहित्य' प्रकाशित किया। उसके अब तक चार संस्करण हो चुके। 1962 में 'मध्ययुगीन काव्य साधना' प्रकाशित की। तिवारीजी के ही सम्पर्क से मुझे अनेक विद्वानों का स्नेह, सहयोग मिला जिनमें प्रमुख हैं—डॉ० दीनदयालु गुप्त, डॉ० भगीरथ मिश्र, पं० ब्रजकिशोर मिश्र, पं० परशुराम चतुर्वेदी तथा अन्य अनेक। जैसे-जैसे तिवारीजी के अध्ययन, अध्यापन, लेखन का विकास हुआ, उसी गति से मेरे लेखन और प्रकाशन का विकास हुआ। हम दोनों नदी के दो किनारे हैं जो धारा बनकर प्रवाहित हैं। अब तक हमने तिवारीजी की मौलिक तथा सम्पादित लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

तिवारीजी की अध्ययनशीलता बेजोड़ है, प्रत्येक नयी पुस्तक उनके पुस्तकालय में उपलब्ध है। ऐसा समृद्ध पुस्तकालय शायद ही किसी अन्य साहित्य-समीक्षक का हो। वे बिना ग्रन्थ पढ़े कभी अपने विचार व्यक्त नहीं करते।

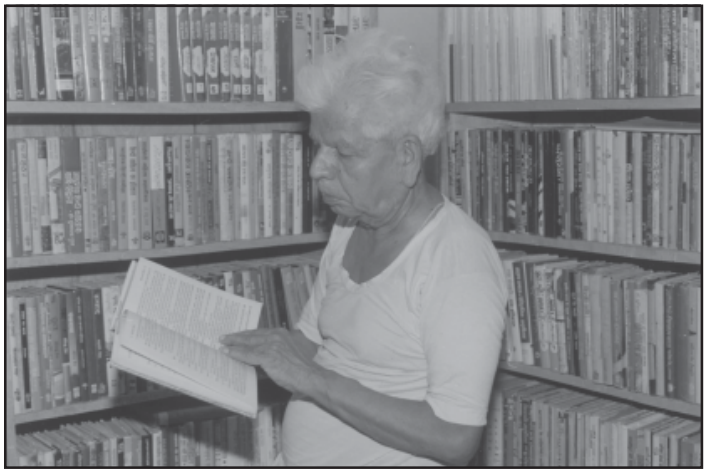

हमारे उनके सत्तावन वर्षों का अटूट सम्बन्ध और उनकी सारस्वत साधना का साक्ष्य यह ग्रन्थ है। उनके कितने शिष्यों ने उनसे सारस्वत दीक्षा प्राप्त की, कितने विद्वानों ने उनकी साहित्य-निष्ठा को स्वीकारा, यह अपने में एक उदाहरण है। कभी उन्होंने अपने ज्ञान और बोध का प्रदर्शन नहीं किया, एकान्त साधक के रूप में सारस्वत साधना करते रहे। साहित्य, इतिहास-दर्शन, अध्यात्म प्रत्येक विषय पर उनकी वार्ता में उनका गहन अध्ययन और मौलिक चिन्तन व्यक्त होता है।

तिवारीजी मेरे परिवार की तीन पीढ़ी से अटूट रूप जुड़े हैं। मेरे पुत्र अपने बचपन में तिवारीजी के आने पर उनके पीछे पड़ जाते थे—कहानी सुनाइये। तीसरी पीढ़ी मेरी पौत्रियाँ तिवारीजी से कहानियाँ सुनने को लालायित रहती थीं।

1964 में मैं सपरिवार काशी आ गया। तिवारीजी का गाँव काशी के निकट है। वे बराबर गाँव जाते हैं, बनारस होकर। ऐसा कोई भी सन्दर्भ याद नहीं आता जब वे बनारस आकर मेरे घर न रुके हों। मेरी पत्नी ने हिन्दी में एम०ए० किया, तिवारीजी ने उन्हें भी पढ़ाया। तिवारीजी का सारा परिवार हमसे अभिन्न है। हमें यह अनुभव ही नहीं होता, कोई अन्य हैं। सभी उसी स्नेह-भाव से परिवार से जुड़े हैं।

याद करता हूँ अपने उस प्रथम मिलन की जब एक अत्यन्त सरल, संकोची किन्तु अध्ययन एवं साहित्य-सामर्थ्य से परिपूर्ण व्यक्ति के रूप में तिवारीजी से परिचय हुआ था। आज भी तिवारीजी के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं, वही सहजता और सरलता। प्रवक्ता से प्रोफेसर तक की यात्रा ने उनके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं किया। वे जीवन के 82 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं।

वे आगे-आगे चल रहे हैं, पीछे-पीछे मैं भी आ रहा हूँ, इसी प्रकार हम चलते रहें, यही कामना है।

❑ पुरुषोत्तमदास मोदी

[*डॉ० रामचन्द्र तिवारीजी के 82वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर प्रकाशित 'सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी' ग्रन्थ से*]

[7 अक्टूबर 2007 को डॉ० रामचन्द्र तिवारी को जब मोदीजी के दिवंगत होने की खबर मिली तब वह सहसा मौन हो गये। कुछ क्षण बाद उन्होंने कहा कि मैं इसके लिए कत्तई तैयार नहीं था। उन्होंने मोदीजी के दोनों पुत्रों (अनुराग और पराग) को निम्नलिखित पत्र भेजा।]

आज (7 अक्टूबर) सबेरे करीब साढ़े आठ बजे प्रेमव्रत (अपने छोटे पुत्र) ने बंधुवर मोदीजी के दिवंगत होने का समाचार दिया। मैं इसके लिए कत्तई तैयार न था। उन्होंने बताया कि 'हार्ट अटैक' हुआ था।

मेरा उनका सम्बन्ध सन् 1952 ई० से था। मैं महाराणा प्रताप डिग्री कालेज में प्रवक्ता के रूप में आया था। उर्मिलाजी (मोदीजी की पत्नी) सेण्ट एण्ड्रयूज़ कालेज से एम०ए० कर रही थीं। उन्होंने मेरा कोई वक्तव्य सुना था, मोदीजी से प्रशंसा की थी। उन दिनों मैं दीवान दयाराम मुहल्ले में उपाध्यायजी के मकान में रहता था। श्री आनन्दप्रकाश दीक्षित सेण्ट एण्ड्रयूज़ में प्रवक्ता थे। उस समय मोदीजी ने बैंक रोड पर एक छोटी-सी दुकान (किताबों की) खोल रखी थी। बाद में वह दुकान नखास ले आए। दुकान चली और खूब चली। उसके बाद उन्होंने प्रकाशन शुरू कर दिया। प्रकाशन की सुविधा के लिए वे काशी चले गए और फिर तो वहीं के होकर रह गए। आज, तुम लोग जिस ऊँचाई पर हो, वहाँ तक पहुँचने में मोदीजी के श्रम, प्रतिभा और सूझ-बूझ का बहुत बड़ा योगदान है।

मोदीजी 'पत्रकार' और 'रचनाकार' भी थे। व्यापारिक वातावरण में आपके ये दोनों रूप दब गए। पत्रकार का रूप अवश्य जीवित रहा। आज मोदीजी नहीं हैं। 1952 से सन् 2007 तक का साथ कम नहीं होता। मुझे लगता है, जैसे मेरी एक 'भुजा' कट गई। मोदीजी का अभाव, ऐसा अभाव है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। उनका परिवार अब भी मेरा परिवार है। मेरा विश्वास है, मोदीजी की यश: काया सदैव अमर रहेगी।

मैं लगभग 84 वर्ष का हो रहा हूँ। कब क्या हो जाय, ठीक नहीं। मेरा एक ही आग्रह (निवेदन) या अनुरोध है कि उन्होंने जो परम्परा कायम की है, उसका निर्वाह करना। 'उर्मिलाजी' का ध्यान रखना। मोदीजी का उन्होंने बराबर साथ दिया है। बेहतर यह कहना होगा कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व को मिटाकर मोदीजी का साथ निभाया है।

मैं स्वयं फोन पर बात करना चाहता था, किन्तु एक तो मुझे सुनाई नहीं देता, दूसरे इतना सब फोन पर कह भी नहीं पाता।

शुभचिन्तक : **रामचन्द्र तिवारी**

पृष्ठ 2 का शेष

सम्मान-पुरस्कार

1. उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 1985 का आचार्य रामचंद्र शुक्ल नामित पुरस्कार; 2. उ०प्र० हिन्दी संस्थान का वर्ष 1995 में 'साहित्य भूषण सम्मान'; 3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा वर्ष 1998 का गोकुल चंद शुक्ल पुरस्कार; 4. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि; 5. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, उ०प्र० द्वारा वर्ष 2000 में सम्मानित; 6. उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ से विभिन्न पुस्तकों पर सात बार पुरस्कृत; 7. भारतीय हिन्दी परिषद, इलाहाबाद द्वारा हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 34वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सम्मानित; 8. नरेन्द्र मोहन स्मृति सम्मान (वर्ष 2006)

रचना-संसार

मौलिक : 1. रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति, 2. हिन्दी का गद्य साहित्य, 3. मध्ययुगीन काव्य-साधना, 4. शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य, 5. कबीर मीमांसा, 6. आलोचक का दायित्व, 7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 8. आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना-कोश, 9. प्रतापनारायण मिश्र, 10. हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार, 11. आधुनिक हिन्दी आलोचना : सन्दर्भ एवं दृष्टि, 12. योग के विविध आयाम, 13. तुलसीदास, 14. सरदार पूर्ण सिंह, 15. कथा राम कै गूढ़, 16. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना, 17. कबीर और भारतीय संत साहित्य, 18. हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ, 19. कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ, 20. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (साहित्य अकादमी)।

अनूदित : 1. नाथ योग : एक परिचय, 2. साहित्य का मूल्यांकन [जजमेन्ट इन लिटरेचर]

सम्पादित : 1. आधुनिक हिन्दी काव्य और कवि, 2. श्रेष्ठ निबन्ध : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 3. रामचंद्रिका, 4. साहित्यमनीषी : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 5. रीतिकाव्य-धारा, 6. निबन्ध निकर्ष, 7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल संचयिता।

इसके अतिरिक्त विभिन्न सन्दर्भ ग्रन्थों में 80 से ज्यादा आलोचनात्मक निबन्ध, विभिन्न पत्रिकाओं में 150 से ज्यादा निबन्ध, अनेक पुस्तकों की समीक्षएँ, विभिन्न ग्रन्थों की भूमिकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आकाशवाणी के गोरखपुर केन्द्र से 50 के लगभग आपकी वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी हैं। ■

समवेदना के पत्र

श्री प्रेमव्रत तिवारी जी (कनिष्ठ पुत्र, स्व० आचार्य रामचन्द्र तिवारी) को प्राप्त कुछ हृदयस्पर्शी पत्र

भाई रामचन्द्र तिवारीजी के निधन का दुखद समाचार विचलित कर गया। अभी तो सोच रहा था कि फरवरी में उधर आऊँगा तो बंधुवर से मिलने का सुख प्राप्त होगा परन्तु.....

हिन्दी साहित्य के इस मौन साधक ने हिन्दी की जो सेवा की है वह स्तुत्य है। आत्म-प्रचार के इस युग में वे चुपचाप एक के बाद एक मूल्यवान आलोचना-पुस्तकें देते गये और कभी कोई अहंकार नहीं पाला। स्वयं बड़ा व्यक्तित्व होकर भी बड़े व्यक्तित्वों के प्रति विनीत रहे और उनकी देन को कृतज्ञ भाव से देखते और परखते रहे। उन्होंने अपनी गद्य साहित्यवाली पुस्तक में नई से नई प्रतिभाओं को भरपूर प्यार दिया है और उनका आकलन भी किया है, यह कितनी बड़ी बात है। अभी तो उनसे कितना कुछ पाना था। किन्तु वे हमें छोड़ कर चले गये। यह दु:ख हम सबका है।

मैं उनकी स्मृति में प्रणाम निवेदित करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आप लोगों को उनका विक्षोह सहने की ताकत दें, धैर्य प्रदान करें। **—डॉ० रामदरश मिश्र,** नयी दिल्ली

■ ■ ■

पूज्य पण्डितजी की लोकयात्रा का उपसंहार। उनके शिष्य डॉ० अमरनाथ शर्मा और मेरे जमाता चि० अविनाशजी ने फोन से त्रासद समाचार दिया।

बहुत बड़ा आश्वासन टूट गया। थे तो हम आश्वस्त थे कि हमारे आँगन में एक बड़ा आलोक खड़ा है, सघन अन्धकार में सही राह दिखानेवाला। अब तो दूर-दूर तक अन्हरिया ही दिखाई पड़ती है। इस तमस में उनका आदर्श, कर्म-निष्ठा और नारायण का अनुग्रह सटीक दिशा-निर्देश देगा।

बेटी का मोह तो अपनी जगह है, गोरखपुर में मेरे लिये तो आपके पितृदेव ही विद्या-जगत के एकमात्र आकर्षण थे। वार्धक्यजनित शिथिलता के बावजूद उनके होने का अर्थ था वैदुष्य और सहृदयता की बड़ी रोशनी की आश्वस्ति का होना। उनके सान्निध्य में हमबल महसूस करते थे। अब तो ऐसी रिक्तता जैसे सम्बल का प्रेरक स्तम्भ ही टूट गया।

मैं न तो उनका छात्र था और न सहकर्मी। मगर मेरा सौभाग्य था कि पण्डितजी मेरे प्रति अतिशय स्नेहशील थे; मेरी पात्रता पर पुष्ट भरोसा था उनका। ऐसी गहरी निकटता कि विद्या-व्यापार के अलावा मुझसे निजी दु:ख-सुख की बातें खुलकर करते थे और मैं भी व्यावहारिक स्तर की अपनी समस्याएँ उन्हीं को बताता था ताकि समाधान का सटीक प्रकाश मिल सके और अपनी व्यस्त विद्या-चर्चा से अवकाश निकाल कर वे मुझे प्राय: लम्बे-लम्बे पत्र लिखा करते थे; मेरा समाचार मिलने में विलम्ब होता था तो चिन्ता-व्याकुल होकर पत्र लिखते थे। मेरी गृहिणी के आकस्मिक निधन की जानकारी पाकर तिवारीजी व्यथित हुए थे, *''मुझे चिन्ता है, यह त्रासदी आपके लेखन-कर्म को न प्रभावित कर दे।''* उनके स्नेह और आत्मीयता का यह स्तर था।

अपनी प्रत्येक पुस्तक मुझे स्नेहपूर्वक भेजते-भिजवाते थे। मेरी प्रत्येक पुस्तक पर दृष्टिपात करना उन्हें जरूरी लगता था। अनेक पुस्तकों की विशिष्टता को आचार्य-विवेक से रेखांकित कर मेरी पीठ ठोकते रहते थे। ऐसा सहृदय आचार्य हिन्दी के पूरे परिदृश्य में अब दिखाई नहीं पड़ता। क्षति का अन्दाज और पीड़ा हर विद्याव्रती को मेरी ही तरह है। पर सनातन सत्य यही है कि विधाता के विधान के सामने मनुष्य निपट निरुपाय है।

आपका दायित्व-भार बहुत बढ़ गया। पण्डितजी ने जागरूकता के साथ आपका विद्या-संस्कार तैयार किया है। उनके अधूरे काम को पूरा कर कृतार्थता उपलब्ध करें, यही मन:कामना है।

—डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र , कोलकाता

■ ■ ■

अभी-अभी आकाशवाणी गोरखपुर से आपके पूज्य पिताजी (डॉक्टर साहब) के निधन का समाचार सुनकर दु:ख हुआ। मेरे प्रति उनका स्नेह और आत्मीयता कभी भूलने की नहीं है। दु:ख है कि वह दिव्य रूप अब देखने को नहीं मिलेगा। गोरखपुर में उनके निवास को मैं एक साहित्यिक तीर्थ समझता था और उसी भावना से प्रेरित होकर वहाँ की यात्रा अत्यन्त उल्लसित होकर करता था। मेरा वह संबल अब समाप्त हो गया। पिछले साल उनके दर्शन का सुयोग मिला था। आप से भी भेंट हुई थी।

गत 37-38 वर्षों से मेरा उनका सम्बन्ध था। उनके व्यक्तित्व और रचनाओं दोनों से मैं प्रभावित था और उन्हें गुरु-तुल्य समझता था। उनकी रचनाओं में संवेदना और चिन्तन दोनों का मंजुल सामंजस्य मिलता है। उनके निधन से आप के परिवार की ही क्षति नहीं हुई है, हम सभी की हुई है, जो उनके साहित्यिक परिवार से जुड़े थे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दें और आप को सपरिवार इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करें।

आपके दु:ख से अत्यन्त दुखी

—डॉ० लल्लन मिश्र, वाराणसी

एक समीक्षक देवता

डॉ० रामचन्द्र तिवारी के निधन से हिन्दी आलोचना-जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। वास्तव में डॉ० तिवारी का व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप से समीक्षक व्यक्तित्व है। अपने समीक्षा-शोधक्षेत्र में उन्होंने आजीवन डूबकर देर तक और दूर तक दौड़ लगाई है। उनकी कृति 'आलोचक का दायित्व' पर-उपदेश जैसा नहीं है बल्कि 'जे आचरिय' वाले प्रामाणिक व्यक्ति की जीवनव्यापी गम्भीर साधनाओं का प्रस्थान-बिन्दु है। इसी साधना की सिद्धि के रूप में 'हिन्दी का गद्य साहित्य' है। बयासी वर्ष की आयु (2007) में इसी नाम की पुस्तक का यह संशोधित-परिवर्द्धित छठा संस्करण, नौ सौ से ऊपर पृष्ठोंवाला, अद्यतन प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य को समेटता हुआ गद्य साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज बन गया है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि गद्य की विविध विधाओं में समान रूप से पूर्ण पैठ के साथ उन्होंने मूल्यांकनपरक समीक्षा की है। वास्तव में डॉ० तिवारी किसी एक विधा के नहीं, काव्य सहित साहित्य की समस्त, पुरानी और नव विकसित विधाओं के प्रमाणिक समीक्षक हैं। उनकी समीक्षा आचार्य शुक्ल की समीक्षा-परम्परा को आगे बढ़ाती है। वह खेमेबाजी से मुक्त थे इसीलिए स्वस्थ थे। उनके समीक्षक व्यक्तित्व की अपनी विशिष्ट पहचान है। आधुनिक काल के आधुनिक मूल्यहीन हल्लाभरे बाजार में वे जीते अवश्य थे पर वह हल्ला उन्हें प्रभावित नहीं करता था। वे अपने मार्ग पर अविचल भाव से सतत बढ़ते चलते थे। यह मार्ग उन्हें एक हल्ला-शून्य शांतिपूर्ण पार्श्व में ले जाता था, जहाँ वे गम्भीर साहित्यिक चेतना-सम्पन्न कृतियों और कृतिकारों, हिन्दी साहित्य के स्तम्भों, हिन्दी साहित्य के गौरवास्पद कालखण्डों और कवियों की 'कसौटी' कहे जानेवाले विशाल गद्य साहित्य के ऐतिहासिक मूल्यांकनवाला प्रामाणिक सौदा करते थे। उनका सौदा क्या होता है, गोरखपुर के बेतियाहाता स्थित 'सरस्वती सदन' की जीवनव्यापी सारस्वत ऐकांतिक साधना होती है। यह एकांत साधना बिना किसी लाभ-लोभ या यशगान-कामना के, मात्र साहित्य के प्रति समर्पित भाव से, सेवा के लिए होती है। मैं ऐसे समीक्षक देवता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनकी स्मृति को प्रणाम करता हूँ। **—विवेकी राय,** गाजीपुर

हमने अपना बड़ा भाई खो दिया : नामवर सिंह

हिन्दी आलोचना के शिखरपुरुष डॉ० नामवर सिंह ने आचार्य रामचन्द्र तिवारी के निधन को अविवादित, तटस्थ और निष्पक्ष आलोचना-परम्परा की आखिरी कड़ी का अवसान बताया है। उन्होंने कहा कि आचार्य तिवारी सादगी और शालीनता की प्रतिमूर्ति थे। वह उम्र में मुझसे बड़े थे, मेरे बड़े भाई जैसे थे, लेकिन हमेशा वह मुझे सम्मान देते थे। उनका निधन मेरे लिए निजी क्षति है। एक तरह से मैंने अपना बड़ा भाई खो दिया है।

कोई यूँ ही नहीं हो जाता
रामचन्द्र तिवारी

कोई यूँ ही नहीं हो जाता रामचन्द्र तिवारी। यह उनकी लगन और तन्मयता ही थी जिसने उनको ऊँचे मुकाम पर पहुँचाया। सामान्य परिवार से उठकर तमाम झंझावातों का डटकर मुकाबला करते हुए आचार्य रामचन्द्र तिवारी ने हिन्दी साहित्य की जिन ऊँचाइयों को छुआ वह कम ही लोगों को नसीब हो पाता है। हाई स्कूल करने के बाद कानूनगोई की परीक्षा के लिए जब डोमिसाइल सर्टिफिकेट बनवाने गये तो डिप्टी साहब पं० कामताप्रसाद अवस्थी ने बातचीत के क्रम में इनकी मजबूरी जान ली और इनकी पढ़ाई-लिखाई, आवास-भोजन आदि की व्यवस्था कराकर लखनऊ अपने परिवार में भेज दिया। उन्हीं के परिवार में रहकर वह लखनऊ के कान्यकुब्ज कालेज में इण्टरमीडिएट के छात्र हो गये। एक जगह उन्होंने लिखा है—''मैंने कैसे द्वितीय श्रेणी में इण्टर पास किया, कैसे छुट्टियों में मिलिटरी कार्यालय में टेम्पररी क्लर्की करके कुछ पैसे बटोरे और कैसे बी०ए० में नाम लिखाया, यह सब यहाँ अप्रासंगिक है।'' लखनऊ से ही उन्होंने एम०ए० किया।

अवस्थीजी का परिवार उनका पूरा सहयोग कर रहा था। फिर भी उनके पास किताबों का अभाव हमेशा रहा जिसकी कमी वह विद्वानों, अध्यापकों व मित्रों से माँग कर पूरी किया करते थे। उनका एम०ए० फाइनल था और उसी समय अकस्मात डिप्टी साहब पं० कामताप्रसाद अवस्थी का, जो इनके मूल स्रोत थे, ब्रेन हैमरेज हो गया और वे नहीं रहे। यह ऐसा वज्रपात था जिससे उनके परिवार का पूरा ढाँचा चरमरा गया। फिर परिवार के लोगों ने तिवारीजी को नहीं छोड़ा और एक सदस्य के रूप में पहले की तरह वे उस परिवार में रहने लगे और प्रथम श्रेणी में एम०ए० उत्तीर्ण किया। 1952 में गोरखपुर के महाराणा प्रताप स्नातकीय महाविद्यालय में उनकी नियुक्ति हो गयी। इसके बाद 1957 में गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हुई और 1958 में वह विश्वविद्यालय में आ गये।

उनकी सिद्धता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि अपने सम्मान-समारोह में प्रो० नामवर सिंह ने कहा था कि ''गोरखपुर के लिए यह गर्व की बात है कि यहाँ डॉ० रामचन्द्र तिवारी जैसा समर्थ आलोचक हैं। मेरे लिए गर्व की बात है कि वे मेरा लिखा एक-एक वाक्य पढ़ते हैं पर यही सोचकर अब कलम उठाते हुए डर भी लगता है कि जो भी लिखूँगा उसे डॉ० तिवारी पढ़ेंगे।''

श्रद्धा-सुमन

साहित्यिक इतिहास के युग का अंत

प्रो० रामचन्द्र तिवारी के निधन से हमारे साहित्यिक इतिहास के एक युग का अंत हो गया। तिवारीजी मध्यकालीन साहित्य के आचार्य थे। उन्होंने रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली पर भी बहुत काम किया। उन्होंने साहित्यकोष बनाए। वे समर्पित अध्येता थे। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' उनकी सबसे ज्यादा बिकनेवाली किताबों में शामिल है। यात्राएँ अधिक नहीं करते थे इससे भ्रम हो सकता है कि वह गोरखपुर तक ही सीमित थे लेकिन उनके लिखे शब्दों की पहुँच देश के हर कोने में थी। उनका मुझे सदैव स्नेह मिला। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य शुरू किया। जब मुझे भारत-भारती व व्यास सम्मान मिला तो उन्होंने व्यक्तिगत पत्र लिखकर बधाई दी।

—प्रो० परमानन्द श्रीवास्तव, *पूर्व विभागाध्यक्ष,*
हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

कर्मों से अर्जित की महानता

आचार्य रामचन्द्र तिवारी का निधन अत्यन्त दुखद है। उन्होंने अपने कर्मों से महानता अर्जित की थी। मैं उनका प्रथम शोध-छात्र था। अध्यापक के रूप में उनकी ख्याति है ही, अध्ययनशील आलोचक, वक्ता के रूप में वे हमारी स्मृति में बने रहेंगे। मैं इस समय अहमदाबाद में हूँ। उनका अन्तिम दर्शन न कर पाने का मुझे दु:ख है। दूरभाष से मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ। **—आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
सम्पादक, 'दस्तावेज'

■ ■ ■

शिक्षाजगत की अपूरणीय क्षति

आचार्य रामचन्द्र तिवारी देश के ख्यातिलब्ध साहित्यकार थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय का यह सौभाग्य था कि उसे ऐसा प्रकाण्ड विद्वान मिला था। वह जितने बड़े साहित्यकार थे उतने ही सादगी पसन्द भी। उनके निधन से विश्वविद्यालय परिवार अत्यन्त दु:ख का अनुभव कर रहा है। शिक्षा-जगत में अपने अतुलनीय योगदान के लिए आचार्य तिवारी सदैव याद किए जाएँगे। हम दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। **—प्रो० एन०एस० गजभिये,** *कुलपति*

■ ■ ■

शिक्षक के रूप में प्रतिमान

आचार्य रामचन्द्र तिवारी हिन्दी साहित्य जगत की विभूति तो थे ही, विश्वविद्यालय के शिक्षक के रूप में प्रतिमान थे। इन सबसे आगे एक महान व्यक्ति व मानवता के पुजारी थे। मेरा सौभाग्य था कि विश्वविद्यालय में आने के कुछ ही दिन बाद उनके सान्निध्य में आया। निरन्तर उनका स्नेह प्राप्त होता रहा। वह सरल, निश्छल व्यक्तित्व एवं उदारमना थे। पहली ही बार में अपना बना लेते थे। नये व्यक्ति को, जो साहित्यिक क्षेत्र में तमाम महत्त्वाकांक्षा लेकर आते थे, मार्ग दिखाना, प्रोत्साहित करना उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण अंग था। उनके दिवंगत होने पर व्यक्तिगत क्षति का अनुभव कर रहा हूँ। **—प्रो० राधेमोहन मिश्र**
पूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

एक स्वीकृत आलोचक

आचार्य रामचन्द्र तिवारी गम्भीर शिक्षक थे। अध्यापक दायित्व का निर्वहन करते हुए उन्होंने अपने को अच्छे आलोचक के रूप में विकसित किया। वह निष्कपट व्यक्तित्व थे। उनकी किताबों में 'हिन्दी का गद्य साहित्य' सिविल सेवा के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है। 'कबीर मीमांसा' उनकी प्रतिष्ठित कृतियों में है। वह न सिर्फ अच्छे इंसान थे बल्कि थे स्वीकृत आलोचक। उनके निधन से हिन्दी साहित्य को अपूर्णनीय क्षति हुई है। **— प्रो० रामदेव शुक्ल**

■ ■ ■

शिक्षा जगत की अपूरणीय क्षति

गोरखपुर विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्रख्यात आलोचक प्रो० रामचन्द्र तिवारी का निधन शिक्षा-जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। समस्त पूर्वांचल को उनके जैसे विद्वान आचार्य की कमी खलती रहेगी। मृदु स्वभाव के प्रो० तिवारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व शैक्षिक क्षेत्र से जुड़े लोगों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

—योगी आदित्यनाथ
सांसद एवं गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी

■ ■ ■

आश्चर्य में डालती रही आचार्य की जिजीविषा

अनेक पुस्तकों की रचना के बाद अभी उनकी नई पुस्तकों का प्रकाशन, अनेक आलोचनात्मक वैचारिक प्रश्नों से उनका टकराते रहना और बेबाक अभिव्यक्ति हम सबके लिए प्रेरक रही है। विश्वविद्यालय स्तर से उनके व्यक्तित्व को देखते हुए आज तक के निरपेक्ष लेखक और गम्भीर आलोचक व्यक्तित्व के रूप में आचार्य तिवारी ने विविध प्रकार का साहित्य हमें दिया है। नाटक और रंगमंच के हर प्रश्नात्मक द्वंद्व और नाट्यालोचन पर, यहाँ तक कि रंगमंचीय सवालों पर, उन्होंने मुझे हमेशा वैचारिक सहयोग प्रदान किया। 'रूपान्तर' पत्रिका का लोकार्पण करते हुए उनके सर्जनात्मक वाक्य आज बेहद याद आ रहे हैं। वह जितना मार्क्सवाद पर बहस कर लेते थे, उतनी ही गम्भीरता से काव्य-शास्त्र और नाट्य शास्त्र पर भी टकराने के लिए तैयार रहते थे। इस अर्थ में उनकी तीव्र स्मृति व अध्ययन का विस्तार आज भी अविस्मरणीय है।

—प्रो० (श्रीमती) गिरीश रस्तोगी
निदेशक, रूपान्तर नाट्य मंच

■ ■ ■

साधक साहित्यकार

आचार्य रामचन्द्र तिवारी पूर्वांचल के साधक साहित्यकार थे। उनके निधन से साहित्य-जगत की जो क्षति हुई है उसकी भरपाई कर पाना मुश्किल है। उन्हें जो भी सम्मान मिला वह उनकी रचना-धर्मिता के मुताबिक कम मिला। आनेवाली पीढ़ियाँ श्रद्धेय आचार्य तिवारी के योगदान को याद करेंगी।

—डॉ० शैलेन्द्रकुमार त्रिपाठी
रीडर, हिन्दी विभाग, विश्वभारती, शांतिनिकेतन

■ ■ ■

जीवन समर्पित

हिन्दी साहित्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य रामचन्द्र तिवारीजी के निधन से न केवल हिन्दी साहित्य जगत बल्कि समूचा पूर्वांचल शोकाकुल है। महाराणा प्रताप महाविद्यालय से प्रारम्भ उनका साहित्यिक जीवन गोरखपुर विश्वविद्यालय का आधार-स्तम्भ बना। उन्होंने अपना पूरा जीवन हिन्दी साहित्य व विश्वविद्यालय के लिए समर्पित कर दिया। गुरुतुल्य प्रो० तिवारी का अपार स्नेह मुझे जीवन भर मिलता रहा। **—डॉ० वाई०डी० सिंह**
सदस्य, उ०प्र० विधान परिषद

■ ■ ■

साहित्य-जगत के मूर्धन्य विद्वान

आचार्य रामचन्द्र तिवारी हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान थे। प्रख्यात साहित्यकार के साथ सरल व्यक्तित्व के नेक इंसान थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय विशेषकर उन विद्यार्थियों का सौभाग्य था जिन्होंने उनके निर्देशन में अध्ययन किया। उनका निधन हिन्दी-जगत के साथ-साथ विश्वविद्यालय परिवार के लिए भी अपूरणीय क्षति है।

—प्रो० सी०पी०एम० त्रिपाठी, *अध्यक्ष,*
प्राणि-विज्ञान विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

अनवरत अध्ययन उनके जीवन का मूलमंत्र

आचार्य रामचन्द्र तिवारीजी जीवन के अन्तिम समय तक सक्रिय रहे। वह गोरखपुर के सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण को प्रेरणा देते रहे। गोरखपुर में उनका होना वहाँ के सभी लिखने-पढ़नेवाले, सादगी के साथ जीवन जीनेवाले व सत्य को सबसे बड़ा मूल्य मानने वालों के लिए एक उपलब्धि की तरह रहा है। अविछिन्न एवं अनवरत अध्ययन उनके जीवन का मूल मन्त्र था। वह ऐसे अध्यापक और आलोचक थे जिन्होंने जितना महत्त्व लेखन को दिया उससे

ज्यादा अपने विद्यार्थियों व अपनी कक्षा को दिया।

—प्रो० चित्तरंजन मिश्र
हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

सच्चे अर्थों में आचार्य थे

आचार्य रामचन्द्र तिवारी का न रहना गोरखपुर के साहित्यिक समाज की अपूरणीय क्षति है। बेहतर मनुष्य, आदर्श अध्यापक और सहृदय समालोचक के रूप में वे हमारे मानस पटल पर अंकित रहेंगे। सच्चे अर्थों में 'आचार्य' रामचन्द्र तिवारी चमक-दमक, चकाचौंध से बिल्कुल दूर रहे। सरस्वती की साधना में रत उन्होंने चन्दन की लकड़ी की तरह अपने को घिस-घिसकर धीरे-धीरे जीवन के अन्तिम समय तक सृजन करते रहे। बड़ी मेहनत, शोध, चिन्तन के उपरान्त उन्होंने विश्वसनीयता अर्जित की थी। मैं ऐसे साहित्य-साधक के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—डॉ० अनंतकीर्ति तिवारी, *उपाचार्य,*
हिन्दी विभाग, सेंट ऐंड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर

■ ■ ■

सर्वत्र समादृत मनीषा

हिन्दी जगत के यशस्वी स्तम्भ, हिन्दी आलोचना को सहज बोधगम्य भाषा देनेवाले मनीषी आचार्य रामचन्द्र तिवारी ब्रह्मलीन हुए तो भाषा-साहित्य के गाम्भीर्य के स्तर पर महानगर में अब सचमुच एक सन्नाटा पसर गया है। कुछ वर्षों पूर्व प्राच्यविद्या मनीषी गुरुदेव आचार्य विश्वंभर शरण पाठकजी नहीं रहे तो आचार्य तिवारीजी ही एकमात्र श्लाकापुरुष थे जिनकी मनीषा सर्वत्र समादृत थी। उनका चिन्तन व प्रकाशन बहुआयामी था और पचासी बसंत पार करके भी अपने शरीर की परवाह न करते हुए वे सृजनशील थे। ऐसे आदर्श विद्या-वारिधि को हमारी भावांजलि।

—प्रो० माताप्रसाद त्रिपाठी
पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

आखिरी इबारत में भी रचनाकर्म

मृत्यु साथ ही चलती है, वह साथ ही बैठती है और सुदूरवर्ती पथ पर भी साथ-साथ ही लौट आती है। महर्षि बाल्मीकि का यह कथन आचार्य रामचन्द्र तिवारी के जीवन पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। करीब दो साल पहले की बात है जब गम्भीर रूप से बीमार पड़े श्रद्धेय आचार्य तिवारी के स्वजन-परिजन निराश होने लगे थे लेकिन आचार्य खुद मौत से मुठभेड़ में डटे हुए थे। अन्ततः तब मौत को ही हार माननी पड़ी और तिवारीजी की लेखनी फिर सरपट हो पड़ी। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' का नवीन संस्करण 2007 में प्रकाशित हुआ तो उसमें लगभग 80 पृष्ठ की सामग्री और आ जुटी थी। 'आचार्य शुक्ल और उनके समकालीन आलोचक', 'हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार' जैसी नई कृतियाँ हिन्दी संसार को मिलीं। यह दुर्लभ है लेकिन आश्चर्यजनक कतई नहीं कि तिवारीजी के हाथ से लिखी आखिरी इबारत भी इनके रचनाकर्म से जुड़ी है। सेनापति पर तैयार हो रही अपनी पुस्तक के लिए उन्होंने वाराणसी में साहित्यिक संस्था चला रहे शिवसेवक मिश्रजी को कतिपय सामग्रियों के लिए पत्र लिखा। यह उनके द्वारा लिखा अन्तिम पत्र ही नहीं था बल्कि उनकी आखिरी इबारत भी थी। 'कर्म ही पूजा' के आदर्श को चरितार्थ करने वाले कलम के इस पुजारी को कोटिशः श्रद्धासुमन।

—कमलेशकुमार गुप्त
हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

आचार्य-परम्परा के सूर्य का अवसान

आचार्य रामचन्द्र तिवारी का निधन गोरखपुर की आचार्य-परम्परा के सूर्य का अवसान है। वे चिन्तन, सृजन और व्यवहार के सारस्वत संसार की ऐसी मूल्यवान कृति थे, जो बहुत कम हुआ करती है। एक ऐसे समय में, जब छल-छद्म, सम्बन्ध-समीकरण और विज्ञापन की पतित प्रवृत्तियों के गर्द-गुबार से साहित्य-संस्कृति का वातावरण पटता जा रहा हो, गहन अध्ययन और मौलिक सृजन के साधना-मूल्यों को नकल और भावानुवादी-छायानुवादों द्वारा प्रबल चुनौतियाँ दी जा रही हों, जब ज्ञान की व्यापकता और गहराई की जगह तिकड़म और बाजारू कौशल मंच पर प्रतिष्ठित होता जा रहा हो तो आचार्य तिवारी का निधन उनके जीवन मूल्यों के महत्त्व को समझने वालों के लिए एक अघोषित नैतिक नेतृत्व और आचार-स्तम्भ का अवसान है। यह अवसान बहुत दिनों तक हमारे मन को शोकविह्वल करता रहेगा।

—डॉ० अनिल राय
हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

■ ■ ■

डॉ० रामचन्द्र तिवारी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामविलास शर्मा और डॉ० नामवर सिंह की परम्परा के आलोचक थे, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की परम्परा के साधक थे और हिन्दी गद्य साहित्य और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सर्वोत्कृष्ट जानकार थे। कबीर, तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ थे। हिन्दी के आदिकाल से लेकर साहित्य की अद्यतन प्रवृत्तियों तक का उन्हें ज्ञान था। साहित्य के किसी खूँटे से बँधे नहीं थे इसलिए उनके लेखन में निष्पक्षता थी। उनकी मेधा का इससे बढ़कर प्रमाण क्या हो सकता है कि बीमारी की हालत में लखनऊ विश्वविद्यालय से उन्होंने एम०ए० की परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी ही नहीं प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनके रचना-संसार से प्रभावित होकर उन्हें विभिन्न संस्थानों ने सम्मानित किया।

डॉ० तिवारी कभी मर नहीं सकते। शब्दब्रह्म है। जब से देह-सृष्टि चली तबसे यह शब्द है और जब तक सृष्टि रहेगी यह शब्द रहेगा। अर्थात जो शब्दों में जीता है वही कालजयी हो जाता है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि सन् 1956 से उनका शिष्य बना और जब तक शरीर साथ देगा, बना रहूँगा। **—राजेन्द्र बहादुर सिंह,** प्रतापगढ़

■ ■ ■

साहित्य-समीक्षा की बड़ी क्षति

काशी। साहित्यिक संघ के ईश्वरगंगीस्थित कार्यालय में पं० पद्माकर चौबे की अध्यक्षता में हुई शोकसभा में गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो० रामचन्द्र तिवारी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। वक्ताओं ने कहा कि प्रो० तिवारी के निधन से हिन्दी की प्रभोज्ज्वल आचार्य-परम्परा की महत्त्वपूर्ण कड़ी टूट गई। हिन्दी के गद्य साहित्य के इतिहासकार और समीक्षक के रूप में उनका योगदान अविस्मरणीय है। 85 वर्ष की अवस्था में मृत्यु के दो-तीन दिन पूर्व तक वे जिस तरह अध्ययन-अनुसंधान और लेखन में दत्तचित्त थे, वह अपने आप में स्मरणीय एवं प्रेरणापूर्ण इतिवृत्त है। गम्भीर अध्ययन, स्पष्ट और सुलझे हुए विचारों तथा उत्तरदायित्वपूर्ण लेखन के लिए वे सदैव याद किये जाएँगे।

शोक-प्रस्ताव

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के शिक्षकों-छात्रों-कर्मचारियों की सभा अपने विभाग के पूर्व अध्यक्ष और प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचन्द्र तिवारी के देहावसान पर गहरा शोक व्यक्त करती है। रविवार, 4 जनवरी 2009 को सहसा हृदयगति रुक जाने से पचासी वर्षीय आचार्य तिवारी का निधन हो गया था। आचार्य तिवारी का व्यक्तित्व श्रेष्ठ अध्यापक, गम्भीर अध्येता और प्रखर आलोचक के रूप में हिन्दी-जगत के लिए अत्यन्त आदर और श्रद्धा का विषय रहा है। जीवनपर्यन्त वे ऐसी निष्ठापूर्ण साहित्य-साधना में कर्मरत रहे, जो हिन्दी साहित्य-संसार के लिए कदाचित दुर्लभ उदाहरण रहे हैं। गम्भीर सृजनात्मक साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण की निर्मिति के लिए उनकी प्रेरणा, उनका प्रोत्साहन निरन्तर स्मरण किया जाता रहेगा। उनकी अकुण्ठ और निर्लिप्त जीवन-यात्रा आलोक-स्तम्भ की भाँति कला-साहित्य के क्षेत्र में सृजनरत लोगों का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

अपनी जीवन-यात्रा को साहित्य की सृजन-यात्रा का पर्याय बना देनेवाले ऐसे आचार्य की स्मृति को यह शोक-सभा अपना विनम्र प्रणाम निवेदित करती है और अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति और उनके स्वजनों-परिजनों को इस गहरे आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—प्रो० अनन्त मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

निर्कुण्ठ व्यक्तित्व के धनी : आचार्य रामचन्द्र तिवारी

वर्ष के प्रारम्भ में ही शुभचिन्तक आचार्य रामचन्द्र तिवारी के निधन की सूचना मन को आहत कर जाती है। आचार्य तिवारी निर्कुण्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। बाह्य व्यक्तित्व गम्भीर मगर अन्तस औदार्यपूर्ण। सहज गुणग्राही। विख्यात व शीर्षस्थ लेखक बहुधा अन्य के लेखकीय पहचान से अपरिचित होते हैं, चर्चा नहीं करते, जबकि तिवारी तो थे ही, पहचान की उनमें तत्परता अन्तरालों को विचार और लेखन पर खड़े होकर प्रोत्साहन के लिए जिससे मनोबल में थी।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री रेवतीरमण तथा उ०प्र० के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री

घनघोर अध्येता पर मोहर लगाने भी थी। वय के पारकर चिन्तन, के एक धरातल विमर्श करते। प्रशंसा भी करते, वृद्धि तो होती ही आचार्य छात्रा नहीं थी निकट का भी बमुश्किल दो विश्वविद्यालय तिवारी की मैं कभी और न ही कोई सान्निध्य था। भेंट या तीन बार हुई थी प्रकाशन में या आदरणीय स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी के आवास पर। मोदीजी की आत्मीयता भी मुझे प्राप्त हुई थी, तिवारीजी के ही माध्यम से। कुछ वर्षों का पत्र-संवाद ही वह स्रोत था, जिनसे मैं आचार्य तिवारी के प्रति श्रद्धावनत हो गयी। विशेष तिथियों पर शुभकामनाओं और आशीर्वादों का सम्प्रेषण भी हो जाता था।

निजी अनुभवों से मैंने जाना था कि तिवारीजी निश्छल, सहज और मानवीय हैं। सच्चे अर्थों में अध्यापक हैं। चिन्गारी को परख कर आग रूप में परिवर्तित करने का यत्न करते हैं। वे कहा करते थे, हर लेखक निराला नहीं हो सकता। प्रतिभा और सामर्थ्य के अनुसार कर्मक्षेत्र में लगे रहना चाहिए। संकेत लेखन की ओर होता। वे स्वयं जीवनपर्यन्त लिखते रहे, पढ़ते रहे। साहित्य के सच्चे साधक थे। परिश्रम की निरन्तरता उनकी विशेषता थी।

अध्यापक और आलोचना का सम्बन्ध घनिष्ठ है। तिवारीजी की प्रसिद्धि आलोचक के रूप में है। गहन अध्ययन, अध्यापकीय ईमानदारी, नये-नये अर्थोन्मेष, नई सूझ-बूझ और मौलिक दृष्टि के कारण ही विश्वविद्यालयीय अध्यापक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद या डॉ० रामविलास शर्मा आलोचक बने थे। उसी परम्परा की मज़बूत कड़ी आचार्य तिवारी हैं।

आचार्य तिवारी के प्रिय लेखक (कवि नहीं) आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे। जिस विधा में लेखन किया, वहीं से अपने आदर्श का चयन किया। कुछ बिन्दुओं, बीजों को लेते हुए अपना पथ प्रशस्त किया।

आचार्य तिवारी पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। उनमें साहित्य के प्रति तटस्थ-दृष्टि और सर्वग्राही प्रयत्नशीलता थी। उन्होंने किसी वैचारिकता के दबाव में लेखन नहीं किया और न ही किसी ख़ास चश्मे से रचना और रचनाकार को देखने की कोशिश की। 'मध्यमार्ग' अपनाते हुए 'कबीर मीमांसा' लिखकर कबीर के महत्त्व का प्रतिपादन करते हैं तो 'कथा राम कै गूढ़' लिखकर तुलसी का। सब प्रकार संस्कृति और प्रतिसंस्कृति की दोनों ही आलोचनात्मक परम्पराओं में 'समन्वय' स्थापित करने का यत्न करते हैं। तिवारीजी 'आलोचना के दायित्व' को गम्भीरता से महसूस करते हैं। उसी उपक्रम में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश, आधुनिक हिन्दी आलोचना : सन्दर्भ एवं दृष्टि, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना जैसी पुस्तकों की उन्होंने रचना की। भारतीय काव्यशास्त्र से ही आलोचना के बीज ग्रहण नहीं करते वरन् पाश्चात्य आलोचना के सिद्धान्तों का भी विवेचन करते हैं। मगर, दृष्टि भारतीय ही है। 'वे दिन' (निर्मल वर्मा) पर लिखते हैं, वे दिन में आधुनिकता बोध के सारे सूत्र-अकेलेपन का बोध उदासी, तनाव, अनिश्चय आदि विद्यमान हैं। यह सब कुछ युद्धोत्तरकालीन यूरोपीय समाज का सत्य है या भारतीय समाज का? जीवन, वह किसी महानगर का क्यों न हो? इन सारी स्थितियों एवं असंगतियों का शिकार हो चुका है? यदि हुआ भी है तो क्या जीवन की व्यर्थता प्रमाणित करना ही लेखक का एकमात्र पुरुषार्थ और दायित्व है? (पृ०सं० 191, हिन्दी का गद्य साहित्य)

कहना न होगा कि आचार्य तिवारी के लिए लेखन एक अनुष्ठान था और उस अनुष्ठान का उद्देश्य एकता और सामंजस्य स्थापित करना था। 'कवि-कर्म' और 'अनुवाद-कार्य' भी किए मगर मन रमा आलोचना में ही। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों आलोचनाओं का। बहुत ही प्रामाणिक रूप से विचारों का परिष्कार करते हुए सन्तुलन स्थापित करते हैं। 'मध्ययुगीन संवेदना' और 'गद्य साहित्य' का विशद, विवेचन, मंथन भी करते हैं। गद्य की सभी विधाओं और नये-पुराने लेखकों पर लेखन करना आसान नहीं है। इस रूप में उनकी किताब 'हिन्दी का गद्य साहित्य' एक महती कार्य है। छह संस्करणों में इसका प्रकाशन ही महत्त्व प्रतिपादन है। यह सब लिखते हुए तिवारीजी का व्यक्तित्व मेरे समक्ष मूर्तिमान हो गया है। मैं उन्हें नमन् करती हूँ। **—डॉ० शशिकला त्रिपाठी,** वाराणसी

सुखद मुलाकात का स्मरण

एक सम्मेलन के तहत गोरखपुर विश्वविद्यालय में, इससे सम्बद्ध सभी कॉलेजों के प्रौढ़ शिक्षाधिकारी एकत्र थे। अपने कॉलेज डिग्री कॉलेज, खरडीहा, गाजीपुर से इसमें भाग लेने के लिए मुझे भी जाना पड़ा था। सम्मेलन के मंच से किसी विषय पर कुछ देर बोलकर मैं ज्यों ही नीचे उतरा, एक युवक मेरे पास आया। उसने कहा, ''मेरे पिताजी (स्व० डॉ० रामचन्द्र तिवारी) आप से मिलना चाहते हैं।'' मैंने कहा, ''मेरे लिए इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती है! चलिए, अभी चलता हूँ।'' और उस युवक के स्कूटर पर बैठकर मैं तिवारीजी के पास पहुँच गया। आरम्भिक औपचारिकताओं (नमस्ते-बन्दगी, चाय-पानी) के पश्चात तिवारीजी ने मुझसे प्यार से पूछा, ''विवेकी राय के उपन्यास (सोनामाटी) की 'आजकल' में छपी समीक्षा तुमने ही लिखी है?''

''जी हाँ, लिखी तो मैंने ही है। क्या कोई खास बात?''

''बड़ी समीचीन समीक्षा की है तुमने।'' फिर वे अपने युवा पुत्र की ओर मुखातिब हुए। कहा, ''जरा विश्वनाथजी को बुला लाओ। कहना, 'सोनामाटी' के समीक्षक रामबदन आए हैं।''

इसके साथ ही मैं उलझन में पड़ गया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी कौन-सी बात मैंने समीक्षा में लिख दी है, जो विश्वनाथजी बुलाए जा रहे हैं।

जल्दी ही डॉ० विश्वनाथ तिवारी आ पधारे। समीक्षा को लेकर देर तक गपशप चली। चलते-चलते स्व० तिवारीजी द्वारा कही गयी ये बातें मेरी जेहन में आज तक मौजूद हैं, ''ऐसी समीक्षाएँ हो कहाँ रही हैं? आजकल तो अपने चहेते समीक्षकों से मनचाही समीक्षाएँ लिखवायी जा रहीं हैं। या फिर मैं तुम्हारी गाऊँ और तुम मेरी गाओ।'' इसके साथ ही स्व० तिवारीजी ने जोर का ठहाका लगाया, जिसमें डॉ० विश्वनाथजी के साथ मैं भी शामिल हो गया। हिन्दी साहित्येतिहास के ऐसे अद्भुत लेखक-समीक्षक की पुण्य स्मृति को शत-शत नमन। **—रामबदन राय,** गाजीपुर

आचार्य डॉ० रामचन्द्र तिवारी हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वान व्याख्याता और विचारवान समीक्षक रहे हैं। उनकी समीक्षा-दृष्टि एकांगी न होकर व्यापक है। साहित्य के बाह्याभ्यंतर विश्लेषण से उद्भूत समग्र-दृष्टि उनकी कृतियों को कर्तृत्व की सम्पूर्णता प्रदान करती है। ऐसे कृति-व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए स्वयमेव खुलने लगते हैं उनकी कृतियों के प्रबन्ध-पृष्ठ...

आत्मनेपद

मैं क्यों लिखता हूँ...

—आचार्य रामचन्द्र तिवारी

किसी भी लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने लेखन-कार्य के प्रयोजन और उद्देश्य का विश्लेषण करे और यह सोचे कि आखिर वह क्यों लिखता है। हमारे प्राचीन आचार्यों ने इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया था और कुछ निर्भान्त निर्णय लेने की कोशिश की थी। उनका कहना था कि किसी भी रचना के मूल में यश की आकांक्षा प्रबल प्रेरक तत्त्व के रूप में विद्यमान रहती है। अर्थ की प्राप्ति, लोक व्यवहार का ज्ञान, अमंगलकारी तत्त्वों के विनाश और कान्तासम्मत उपदेश रचना के अलग उद्देश्य हो सकते हैं। समय और सन्दर्भ के बहुत कुछ बदल जाने पर भी ये उद्देश्य आज भी अपनी सीमाओं में सार्थक और प्रासंगिक माने जा सकते हैं। आज भी अनेक लेखक इन्हीं सीमाओं में अपने लेखन के उद्देश्य की व्याख्या करते हैं। किन्तु गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो ये परम्परागत उद्देश्य रचनात्मक साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि के सन्दर्भ में बहुत सार्थक नहीं हैं। जो रचना अर्थप्राप्ति के उद्देश्य से लिखी जायेगी वह बाजारू होगी और निश्चय ही उसका स्तर घटिया होगा। इसी प्रकार मात्र यश की आकांक्षा से लिखा गया साहित्य भी उच्चतम कोटि का नहीं होगा। यश का तात्कालिक आधार देश-कालबद्ध लोक-मानस होता है। देश-काल की सीमा का अतिक्रमण करके लोक-मानस को परिष्कृत करने वाला उच्चतर साहित्य तत्काल यश-प्राप्ति में सहायक नहीं हो सकता। ऐसा होता तो भवभूति को समानधर्मा की प्राप्ति के लिए 'कालो हि अयं निरवधि: विपुला च पृथ्वी' कहकर संतोष न करना पड़ता। लोक व्यवहार का ज्ञान कान्तासम्मत उपदेश और शिवेतर की क्षति जैसे उद्देश्य भी उच्चतर रचनात्मक साहित्य के लिए आनुषंगिक ही माने जायेंगे। इन उद्देश्यों की सिद्धि तो हितोपदेश और नीति कथाओं से भी हो सकती है।

प्रथम कोटि का कालजयी रचनाकार निश्चय ही किसी प्रबल आन्तरिक दबाव से प्रेरित और किसी गहन मानसिक आकुलता की अभिव्यक्ति की अनिवार्यता से चालित होकर रचना में प्रवृत्त होता है। दुर्भाग्य से मेरा लेखन इस स्तर के रचनात्मक साहित्य की कोटि में नहीं आता। मैं संस्कारत: एक अध्यापक हूँ। **अध्यापक से आशा की जाती है कि वह निरन्तर अध्ययनरत रहकर अपने ज्ञान क्षेत्र की सीमा का विस्तार करता रहे और अर्जित ज्ञान को पूरी तत्परता से निष्ठापूर्वक अपने छात्रों को उपलब्ध कराये।** यह कार्य लेखन-कर्म के बिना भी सम्पादित किया जा सकता है किन्तु आज के अध्यापक को अपने अध्ययनरत रहने की स्थिति को प्रमाणित करने के लिए शोध उपाधियाँ प्राप्त करनी पड़ती हैं और शोध पत्रों को प्रकाशित कराना पड़ता है। इस कोटि का लेखन बहुत कुछ बाहरी दबाव से उपाधि एवं पद प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है। निश्चय ही यह लेखन प्रथम कोटि का नहीं हो सकता। इसके स्तर का निर्धारण संधान से प्राप्त तथ्यों की नवीनता या पूर्व प्राप्त तथ्यों की नई दृष्टि से की गयी व्याख्या के आधार पर किया जाता है। मेरे लेखन का एक बहुत बड़ा अंश इसी सीमित उद्देश्य की पूर्ति का साधक है। वह क्यों लिखा गया है ? इसका उत्तर साफ और स्पष्ट है व उपाधि प्राप्त करने और शोधरत रहने की स्थिति को प्रमाणित करने के लिए लिखा गया है। इसकी चरम सार्थकता इतनी ही है कि उससे हिन्दी साहित्य के प्रामाणिक एवं पूर्ण इतिहास लेखन के क्रम में वांछित कुछ अज्ञात एवं अल्पज्ञात सूत्र उपलब्ध होते हैं। मेरे लेखन का दूसरा बड़ा अंश मुख्यत: छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखा गया है। मुझे यह मुगालता नहीं है कि मैं बहुत बड़ा समीक्षक एवं आलोचक हूँ और हिन्दी के श्रेष्ठ रचनाकारों के साहित्य की मूल संवेदना को जीकर उसे पुन: सर्जित करके रचनात्मक समीक्षा के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैंने जिन मध्यकालीन कवियों की चर्चा की है उनमें से किसी के भी मर्म में प्रवेश करना असाधारण उपलब्धि है। किन्तु मुझे यह भी पता है कि जिन लोगों ने कबीर, जायसी, सूर या तुलसी के मर्म में प्रवेश करने का दावा किया है उन्होंने इन कवियों की मूल संवेदना को जीने के बजाय अपने को अपनी संस्कारगत सीमाओं के साथ उन पर आरोपित कर दिया है। जो समीक्षक किन्हीं आधुनिक जीवन-मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं उन्होंने उन मूल्यों को ही इन कवियों पर आरोपित कर दिया है। मैंने यथासम्भव इस आरोपण क्रिया से अपने को बचाया है। इन कवियों की शब्द साधना के साथ चलते हुए मैं जहाँ तक जा सका हूँ, गया हूँ। जो मनोभूमि मेरे लिए अगम्य है वहाँ अनधिकृत प्रवेश की चेष्टा मैंने नहीं की है। कबीर की बेहद्दी मैदान, जायसी का बैकुण्ठी प्रेम, सूर की स्वच्छन्द कल्पना निर्मित अखण्ड आनन्द भावित नित्य लीला भूमि और तुलसी का निर्विकार, निर्मल, निस्तरंग, मानस मेरे लिए स्पृहणीय रहे हैं। इनमें से किसी की भी काव्य सम्वेदना को जीने की क्षमता रखने वाला मेरे लिए प्रणम्य है। इन कवियों की श्रेष्ठता के स्थूल आधार-तत्त्वों को एक सीमित उद्देश्य से स्पष्ट कर देने में ही मैंने अपनी लेखन कर्म की सार्थकता मानी है।..... ■

हिन्दी गद्य साहित्य की प्रामाणिक पहचान

—रामदरश मिश्र

'हिन्दी का गद्य साहित्य' डॉ० रामचन्द्र तिवारी की प्रसिद्ध गद्य कृति का छठाँ संस्करण है। पहला संस्करण 1955 में आया था। 1955 के पश्चात हिन्दी के गद्य साहित्य का विपुल विकास हुआ। लेखक ने पुस्तक के दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें संस्करण में बहुत कुछ समेटा था, और सब इस छठे संस्करण में आज तक का समूचा गद्य-साहित्य आ गया है। एक तरह से यह पुस्तक हिन्दी के गद्य-साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज बन गयी है। डॉ० रामचन्द्र तिवारी साहित्य के गम्भीर अध्येता और समीक्षक हैं। साहित्य की हर गतिविधि को वे सजग और खुली दृष्टि से देखते हैं और हर रचना को उसकी क्षमता के आधार पर जाँचते-परखते हैं। आज जबकि भिन्न-भिन्न आधारों पर पक्षधरता फल-फूल रही है तथा अनेक अध्येता और आलोचक अपनी सुविधा या षड्यंत्र के तहत रचनाओं का स्तवन या उपेक्षा कर रहे हैं और हर विधा के इतिहास की अधूरी या गलत तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं, तब डॉ० रामचन्द्र तिवारी की इस पुस्तक का महत्त्व और बढ़ जाता है।

समग्रता और सघनता दोनों दृष्टियों से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। समग्रता का आलम यह है कि लेखक ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर आज तक के हिन्दी गद्य के विकासमान स्वरूप की प्रामाणिक पहचान प्रस्तुत की है तथा हर विधा में लिखी गयी सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं और पुस्तकों का लेखा-जोखा एवं आकलन प्रस्तुत किया है। यहाँ तक कि पत्र-पत्रिकाओं का भी संक्षिप्त किन्तु प्राय: समग्र परिचय दिया है। आजकल की घटिया साहित्यिक राजनीति और ओछी आलोचना-दृष्टि अनेक महत्त्वपूर्ण लेखकों की या तो उपेक्षा कर देती है या उन्हें हाशिये पर डाल देती है और अनेक महत्त्वहीन लेखकों को केन्द्र में स्थापित करने की कोशिश करते हैं। डॉ० तिवारी इस दूषित हवा के शिकार कभी नहीं हुए उससे कभी आतंकित भी नहीं हुए। वे यही कहते और लिखते रहे जिसे वे भीतर से अनुभव करते रहे। प्रस्तुत कृति उनकी इस प्रकृति का प्रमाण है। उन्होंने हर विधा के उन तमाम लेखकों को पढ़ा और समझा है जो छपते रहे हैं और पाठकों को प्रभावित करते रहे हैं। उन्हें समझने और महत्त्व देने का आधार केवल साहित्यिक रहा है। इसलिए रचनाओं और लेखकों के चयन तथा विश्लेषण के पीछे साहित्यिक राजनीति का कोई दबाव लक्षित नहीं होता। डॉ० तिवारी की यह पुस्तक गद्य साहित्य का इतिहास भी है और मूल्यांकन भी। इतिहास है, इसलिए

शेष पृष्ठ 10 पर

साहित्य में प्रतीकों का महत्त्व

किसी परोक्ष भाव, विचार, धारणा या प्रत्यय के स्वरूप की प्रतीति कराने वाली उससे सम्बद्ध या प्रस्तुत वस्तु को उस परोक्ष वस्तु का 'प्रतीक' समझा जाता है। शाब्दिक व्याख्या के अनुसार 'प्रतीयते अनेन इति प्रतीकः' अर्थात् जिसके द्वारा किसी परोक्ष का प्रति-विधान किया जाता है। 'प्रतीक' परोक्ष या अप्रस्तुत का प्रतिनिधि और स्थानापन्न होता है।

प्रतीकों की आवश्यकता यों तो धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में पड़ती है किन्तु साहित्य में इसका विशेष महत्त्व है। ज्ञान के सभी क्षेत्रों में ऐसे अनेक प्रत्यय और धारणाएँ हैं जो अमूर्त और परोक्ष हैं। मानव की चेतना और कल्पना-परिधि अत्यन्त व्यापक है। वह अपनी समग्र चेतना की प्रचलित भाषा को सीमित शब्दावली में व्यक्त नहीं कर पाता। इसीलिए वह अनादि काल से अपनी अभिव्यक्ति को पूर्ण बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करता आया है। हमारा वैदिक और पौराणिक साहित्य प्रतीकों से भरा हुआ है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि दो पक्षी एक ही वृक्ष का आश्रय लेकर सख्य भाव से साथ-साथ रहते हैं। इनमें एक तो वृक्ष के फल का स्वाद लेता है किन्तु दूसरा उससे अनासक्त रहकर केवल देखता है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्य
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

हिन्दी साहित्य में योगियों, सन्तों और सूफियों ने गूढ़ एवं रहस्यात्मक अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। गोरखनाथ और कबीरदास की उलट बासियों में साम्प्रदायिक प्रतीकों का प्रयोग मिलता है। कबीरदास ने कहीं-कहीं व्यापक आध्यात्मिक चेतना से सम्बद्ध प्रतीकों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने 'काहे री नलिनी तु कुम्हिलानी, तेरो ही नाल सरोवर पानी' कहकर सरोवर के ज्ञान को ब्रह्म-तत्त्व तथा नलिनी को जीवात्मा का प्रतीक माना है। जायसी ने तो 'पद्मावत' की पूरी प्रेम-कथा को ही प्रतीकात्मक बना दिया है। प्रतीकात्मक शैली के कारण ही वे लौकिक प्रेम-कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यञ्जना कर सके हैं।

सगुण भक्तों और रीतिकालीन श्रृंगारिक कवियों का ध्यान प्रत्यक्ष जीवन की ओर अधिक आकृष्ट था इसलिए उन्होंने प्रतीक-विधान बहुत कम किया है। सूरदासजी ने अपनी रहस्यात्मक प्रवृत्ति का परिचय देते हुए कहीं-कहीं रूपकात्मक प्रतीकों का प्रयोग अवश्य किया है। तुलसी और घनानन्द ने घन और चालक के चिर परिचित प्रतीकों के माध्यम से भक्त और भगवान के दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति की है। बिहारी के काव्य में अन्योक्तिपरक प्रतीक मिलते हैं। उन्होंने 'अली' को रूप-लोलुप नायक का और 'कली' को मुग्धा नायिका का प्रतीक माना है। इस प्रकार प्रतीकों का नितांत अभाव इन कवियों में भी नहीं है।

आधुनिक काल में छायावादी काव्य-आन्दोलन के साथ प्रतीक-विधान की परम्परा को विशेष महत्त्व दिया गया। छायावादी कवि प्रत्यक्ष के साथ ही परोक्ष की, लौकिक के साथ अलौकिक की, स्थूल के साथ सूक्ष्म की, भौतिक के साथ आध्यात्मिक की, और ससीम के साथ असीम की व्यञ्जना करना चाहते थे। इसलिए उन्हें प्रतीक-पद्धति का सहारा लेना पड़ा। प्रतीक-विधान की दृष्टि से हिन्दी का छायावादी काव्य सर्वाधिक समृद्ध है।....

नयी कविता में प्रतीकों से अधिक महत्त्व बिम्बों को दिया गया। फिर भी अज्ञेय की कविताओं में प्रयुक्त 'नदी का द्वीप, धारा, दीप और पंक्ति जैसे प्रतीकों की पर्याप्त चर्चा हुई और इन्हें क्रमशः 'मध्यवर्गीय परिवेश, जनधारा, व्यक्ति-चेतना और समष्टि-चेतना' के श्रेष्ठ प्रतीकों के रूप में स्वीकार किया गया।

अब कथा-साहित्य में भी प्रतीकों का सार्थक प्रयोग होने लगा है। यों तो पहले के उपन्यासों और कहानियों के नामों में भी एक प्रकार की सांकेतिकता और प्रतीकात्मक लाने की चेष्टा की गई है। इस प्रयत्न में कुछ व्यंजक प्रतीक सामने आये हैं। उदाहरण के लिए 'ब्लाटिंग पेपर' प्रेम की अतृप्ति का 'तिनका' मध्यवर्गीय नायक की विवशता का और टूटा हुआ लैम्पपोस्ट भाग्य-हीनता का प्रतीक माना गया है। इन प्रतीकों से पूरा कथा-शिल्प प्रभावित हुआ है और उसकी व्यंजना-शक्ति विस्तृत हुई है।

स्पष्ट है कि प्रत्येक युग में कवियों, विचारकों और साहित्यकारों ने प्रतीकों का प्रयोग किया है। इससे प्रतीकों का महत्त्व स्वयं प्रमाणित है। प्रतीकों का प्रयोग इतिवृत्तात्मक और यथार्थवादी वर्णन की नीरस परम्परा को सांकेतिक एवं लाक्षणिक बनाकर काव्य की रमणीयता में वृद्धि करता है। इससे अमूर्त एवं परोक्ष अनुभूतियों को मूर्त करने में सहायता मिलती है। इसके द्वारा रूपक, अन्योक्ति, रूपकातिशयोक्ति, उपमा आदि अलंकारों को अधिक सौन्दर्य प्रदान किया जा सकता है। इसके आधार पर पूरी काव्य या कथा कृति को सांकेतिक बनाकर श्रेष्ठ समासोक्तिमूलक रचना प्रस्तुत की जा सकती है। यह रहस्यात्मक अनुभूतियों, सूक्ष्म चेतना विम्बो और झिलमिलाती हुई अपूर्व अर्थ-छवियों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। पन्त जी ने ठीक ही कहा है—

जो अव्यक्त रहा अन्तर में
मुक्त अगीत रहा ध्वनि स्वर में
उसे प्रतीकों ही में, रहने दो, रहने दो।

— डॉ० रामचन्द्र तिवारी की समीक्षा कृति 'आधुनिक हिन्दी-साहित्य : विविध आयाम' पुस्तक से

पृष्ठ 9 का शेष (हिन्दी गद्य साहित्य....)

गद्य-भाषा और उसमें लिखी जा रही विविध साहित्य विधाओं के क्रमिक विकास की स्पष्ट और प्रामाणिक पहचान उभरती है। इस प्रक्रिया में लेखक ने विविध साहित्यान्दोलनों और वादों की मूल प्रकृति का विश्लेषण किया है। मूल्यांकन भी है। अतः लेखक ने विविध लेखकों और उनकी कृतियों का विशेषतः प्रमुख कृतियों का बहुत थोड़े में किन्तु सारभूत रूप में विश्लेषण और मूल्यांकन किया है। लेखक ने हर विधा के अनेक रचनाकारों को अपने अध्ययन में समेटा है, किन्तु यह द्रष्टव्य है कि उसने कहीं शब्द-जाल से काम नहीं लिया है। हर लेखक की अपनी निजी पहचान और विशेषताओं को उसने रेखांकित किया है। वैसे डॉ० तिवारी की दृष्टि उदार है। वे लेखकों और कृतियों के धनात्मक पक्ष को अधिक देखते हैं किन्तु महत्त्वपूर्ण कृतियों की सीमाओं को भी बड़ी सहजता से सामने रख दते हैं। जैसे 'राग दरबारी' पर बात करते करते वे कहते हैं—''उपन्यास में एक ही बात खटकती है। लेखक ने घटनाओं, स्थितियों पात्रों पर ऐसे कोण से व्यंग्य किया है कि लगता है कि इसमें कहीं भी उसकी निजी भागीदारी नहीं है। इसलिए यह पाठक को उत्तेजित नहीं करता।'' इसी प्रकार निर्मल वर्मा के उपन्यासों की विशेषताएँ बताते हुए निष्कर्ष निकाला गया है—''निर्मल निश्चय ही एक विशिष्ट रचनाकार हैं किन्तु उनकी रचनाओं में उभरने वाली स्थितियाँ और उनका प्रभाव आरोपित अधिक और सहज कम प्रतीत होता है।''

इसी प्रकार अनेक चर्चित उपन्यासों तथा विधाओं की कृतियों के यथार्थ तथा रूप-विन्यास शक्तियों और सीमाओं को संकेतित किया गया है, विस्तृत विवेचन की गुंजायश तो यहाँ थी नहीं। हर विधा की कृतियों से गुजरते हुए निष्कर्ष रूप से उनकी सामूहिक उपलब्धि का भी स्पष्ट आकलन किया गया है।

पुस्तक के तीसरे खण्ड में डॉ० तिवारी ने भारतेन्दु से लेकर फणीश्वरनाथ 'रेणु' तक 29 विशिष्ट लेखकों के समग्र गद्य-साहित्य की पहचान करते हुए उनका मूल्यांकन किया है। लेखक ने इन रचनाकारों की रचनाओं, मूल प्रवृत्तियों, दृष्टियों का संक्षिप्त किन्तु सघन विवेचन करते हुए उनकी साहित्यिक उपलब्धियों की परीक्षा की है। लेखक इन रचनाकारों के आकलन के माध्यम से पाठकों को गद्य-साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पड़ावों की पहचान से गुजारता है। तथ्य और विश्लेषण का कुशल साहचर्य इतिहास और आलोचना की अच्छी संगति प्रस्तुत करता है। ■

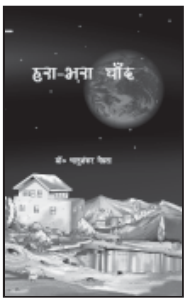

हरा-भरा चाँद
[साइंस फिक्शन (विज्ञान वैचित्र्य कहानियाँ)]
डॉ० भानुशंकर मेहता
प्रथम संस्करण : 2009 ई०
पृष्ठ : 136
सजिल्द : रु० 120.00
ISBN: 978-81-7124-685-4
अजिल्द : रु० 70.00 ISBN : 978-81-7124-686-11
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

डॉ० भानुशंकर मेहता बहुमुखी प्रतिभा और व्यक्तित्व के धनी हैं। वे मूलत: चिकित्सक हैं लेकिन उनका मन चिकित्सेतर विषयों में ज्यादा रमता है। वे सुविख्यात और कुशल रंगकर्मी हैं। नाटक, व्यंग्य, इतिहास और दर्शन जैसी विधाओं में उनकी प्रतिभा का विस्तार हुआ है। उनके चिंतन और अध्ययन का दायरा इतना विस्तृत है कि हर विषय उसके भीतर सिमट जाता है।

फिक्शन के लेखक हिन्दी में नहीं के बराबर हैं। वैज्ञानिक फिक्शन का तो एकदम अभाव है। यूरोप और पश्चिमी देशों में कई लेखकों ने वैज्ञानिक फिक्शन लिखे हैं और उन्हें विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली है। हिन्दी में दुर्गाप्रसाद खत्री ने फिक्शन लिखकर बनारस को इस विधा में अग्रता दिलाई है। प्रख्यात कथाकार शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास **अंतरिक्ष के मेहमान** को इस कोटि में रखा जा सकता है। इस विधा में वही लेखक सफल हो सकता है जिसमें प्रखर कल्पनाशक्ति हो। वह उड़ान भरता हुआ आकाश को चूम लेने की क्षमता ही न रखता हो, वरन् उससे पार चला जाय, सृष्टि के किसी भी कोने में भ्रमण कर आए।

प्रस्तुत संकलन **हरा-भरा चाँद** वैज्ञानिक कथाओं का एक अनूठा संकलन है। इसकी काल्पनिक वैज्ञानिक कथाएँ लेखक की प्रचुर कल्पनाशक्ति से एक-एक कर सारे आवरण हटा लेती हैं और पाठक को एक ऐसे संसार में ले जाती हैं जहाँ से लौटने का उसका मन नहीं होता। वह रम जाता है उसी में। ये कथाएँ बेहद मनोरंजक और दिलचस्प हैं। पाठक लेखक के भावजगत से अपने-आपको जोड़ने के लिए विवश हो जाता है। लेखक के व्यंग्यकार की छाया हर कहीं एक विचित्र आकर्षण के साथ मौजूद रहती है। इससे इन विज्ञान कथाओं (साइंस फिक्शन) की रोचकता बढ़ जाती है।

डॉ० मेहता ने अपनी विद्वत्तापूर्ण भूमिका में साइंस फिक्शन के लेखन के बारे में विस्तार से बताया है। उन्होंने यह भी बताया है कि साइंस फिक्शन के जरिए विज्ञान के अध्यापक अपने छात्रों को किस प्रकार विज्ञान की शिक्षा देते हैं। विज्ञान के लेखकों की जानकारी भी इस पुस्तक में दी गई है।

इस पुस्तक में कुल 25 साइंस फिक्शन हैं। चाँद, मंगल ग्रह, अंतरिक्षयान, भूकम्प, ब्रह्माण्ड आदि विषयों को केन्द्र में रखकर रोचक फिक्शन लिखे गए हैं। एक कथा में **अपोलो 14** का असली रहस्य बताया गया है। मंगल ग्रह पर रोगी भी हैं और बूढ़े भी। कुल मिलाकर यह संग्रह पाठकों के लिए बेहद मनोरंजक, रुचिकर और दिलचस्प तो है ही, हिन्दी साहित्य को डॉ० मेहता की अमूल्य देन भी है।

शीघ्र प्रकाश्य

नाटक बनती देशी-विदेशी चित्र/विचित्र कहानियाँ
डॉ० भानुशंकर मेहता

विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न डॉ० भानुशंकर मेहता की यह कृति विभिन्न भाषाओं के लेखकों द्वारा लिखी गई दिलचस्प और मनोरंजक कहानियों का नाट्य रूपांतर है। बंगला, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी और हिन्दी।

इस संकलन में रूपांतरित नाटकों की संख्या बीस है। सभी रुचिकर हैं और पाठक तथा दर्शक से तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम हैं। किसी नाटक की खास विशेषता यह होती है कि वह दर्शक से किस हद तक संप्रेषित होता है या नाटक और दर्शक के बीच साधारणीकरण होता है। दर्शक नाटक के पात्रों को कितना जी पाता है। इस संकलन के नाटक इस कसौटी पर पूर्णरूप से खरे उतरते हैं। सभी नाटक मंचित होने योग्य तो हैं ही, पढ़कर आनंद उठाने योग्य भी हैं। इन्हें कहानी और उपन्यास की तरह पढ़कर रोमांचित हुआ जा सकता है, मन को रंजित किया जा सकता है।

नाटक बनती बाल कथाएँ
डॉ० भानुशंकर मेहता

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० भानुशंकर मेहता की प्रतिभा का एक कोण उनके नाटककार और रंगकर्म में निखरता है। डॉ० मेहता की अन्य पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है। बच्चों के लिए एक अनुपम भेंट है और रंगमंच के लिए नववर्ष का बहुमूल्य उपहार भी है। ये बाल नाटक आसानी से और सफलतापूर्वक मंचस्थ किए जा सकते हैं।

बच्चे इसे पढ़ेंगे, खेलेंगे और आनन्दित होंगे। यह एक सच्चाई है कि बाल नाटक जितने खेले गए हैं, उतने उनके संकलन नहीं हैं। इस पुस्तक के द्वारा इस कमी को पूरा करने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। यह पुस्तक न केवल पठनीय है वरन् संग्रहणीय भी है। यह पाठकों को बाल-नाटकों के माध्यम से बंगला और गुजराती रचना संसार तक पहुँचा सकती है। विश्वप्रसिद्ध पंचतंत्र की कहानियों तक ले जा सकती है। चीनी और अंग्रेजी कथा क्षेत्र का भ्रमण करा सकती है। प्रसिद्ध अरबी कथा-संसार में एक बार फिर लौटा सकती है।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर अंक में वरिष्ठ पत्रकार रामअवतार गुप्त के निधन का समाचार पढ़कर दु:ख हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री गुप्त की भूमिका भुलाई नहीं जा सकती।

—ऋषि मामचन्द्र कौशिक, हैदराबाद

दिसम्बर का 'भारतीय वाङ्मय' मिला। श्री एस० शंकर का आलेख 'बिकने वाला लेखन' काली चमड़ी वाले उन अंग्रेजों की कलई खोलता है जो पश्चिम के अंधभक्त हैं और भारतीयता को निकृष्ट समझते हैं। मेरे जैसे न जाने कितने लोग हैं जो अंग्रेजी की कथा-कहानियाँ नहीं पढ़ते, भले ही उनके लेखक कथित रूप से भारतीय ही क्यों न हों। ऐसा रहस्योद्घाटन लेख पढ़ने के पश्चात् तो ऐसी पुस्तकों को पढ़ने की कोई उत्सुकता भी नहीं रह जाती। ऐसे अच्छे आलेख के लिए लेखक के साथ-साथ आप भी बधाई के पात्र हैं।

—डॉ० प्रदीप जैन, मुजफ्फरनगर

भारत द्वारा आणविकसम्बन्धी अमेरिकी प्रस्ताव को स्वीकार करने तथा शिक्षा संस्कार की शोचनीय दशा पर कुशलता और पारदर्शिता पर ध्यान आकृष्ट किया गया है, स्थिति विचारणीय है। शुद्ध हिन्दी लिखने व उससे सम्बन्धित प्रचार करने आदि की जो वास्तविकता की राह है, ध्यान देकर अमल करने का प्रयत्न करना जरूरी प्रतीत होता है। अंक में ढेर सारी पुस्तकों, पत्रिकाओं की संक्षिप्त समीक्षाएँ तथा समाचार ज्ञानवर्धन हेतु अच्छे हैं। **—मदनमोहन वर्मा**, ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' हिन्दी जगत की अनूठी मासिक पत्रिका है जो उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम के सभी हिन्दी-अहिन्दीभाषी बहुसंख्यक वर्ग की भावनाओं, गतिविधियों, साहित्यिक अवदानों तथा सांस्कृतिक क्रियाकलापों का संक्षिप्त/सार्थक लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में बहुपक्षीय मन्तव्य और तत्सम्बन्धी निष्पक्ष विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है। **—मोतीलाल जैन 'विजय'**, म.प्र.

मेरे सामने 'भारतीय वाङ्मय' मासिक पत्रिका रखी हुई है। इसमें एक लेख छपा है। 'आइये एक दीपक तो जलाइये।' मैं भी प्रतिदिन यही रट लगाता हूँ 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' मुझे अँधेरे से उजाले की ओर ले चल। है कोई उजाले की ओर ले जाने वाला? मैंने एक दीपक जलाया था कि मैं युवा पीढ़ी को साधना की ओर ले जाऊँगा ताकि मेरा देश सुधरे लेकिन दीपक तेल की कमी के कारण अन्धकार की ओर अग्रसर है। मैं सोच रहा हूँ कि कैसे यह दीपक जलता रहे क्या कोई सौर ऊर्जा है जो अनन्त काल तक इस दीपक को जलाये रख सके? कहते हैं शब्द नित्य है। शब्द कोई दीजिए ताकि यह दीपक जलता रहे। **—सत्यदेव शास्त्री**, नई दिल्ली

सिंहावलोकन : साहित्य : 2008

हिन्दी में कथा-साहित्य, उपन्यास और कहानी, सबसे अधिक प्रकाशित होता है, यहाँ यह प्रश्न उठाने की मंशा कतई नहीं है कि साहित्य की केन्द्रीय विधा कौन-सी है, गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों ही दृष्टि से कथा-साहित्य का अपना महत्त्व है।

पाठकों के धैर्य की परीक्षा लेते हुए कुछ 'महाकार' उपन्यास भी आए जिन्हें पढ़ने को धैर्य बहुत जरूरी है। 868 पृष्ठीय मेवा राम का 'दाराशुकोह' ऐसा ही ऐतिहासिक उपन्यास है। कृष्णा अग्निहोत्री का 512 पृष्ठीय उपन्यास 'नानी अम्मा मान जाओ' भी पाठक को अपने आकार से धमकाता है।

वरिष्ठ पीढ़ी के कई रचनाकारों ने उत्तरकाल के दंश को अपनी-अपनी तरह से उपन्यासों में वाणी दी है—चित्रा मुद्गल, रमेशचंद्र शाह ने पिछले दो-तीन वर्षों में और इस वर्ष काशीनाथ सिंह और रवीन्द्र वर्मा ने इसी विषय को अपने उपन्यासों का कथ्य बनाया है। काशीनाथ सिंह का 'रेहन पर रग्घू' पूरे भारतीय परिदृश्य में इस गम्भीर समस्या को बड़ी सहजता से रेखांकित करता है। रवीन्द्र वर्मा का 'आखिरी मंजिल' भी अमेरिकी पड़ाव से देखी गयी दुनिया का संवेदनात्मक चित्रण है। नासिरा शर्मा का 'जीरो रोड' दुबई के जीवन को केन्द्रित कर लिखा गया उपन्यास है। संजीव का नया उपन्यास 'आकाश चम्पा' एक प्रकार से मोहभंग का उपन्यास है।

हिन्दी में साम्प्रदायिकता की समस्या को लेकर कितने ही उपन्यास समकालीन समय में आए हैं, इन सबसे अलग अब्दुल बिस्मिल्लाह का 'अपवित्र आख्यान' आया है।

अलका सरावगी का उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' खुली अर्थ-व्यवस्था के परिणामस्वरूप औद्योगिक जगत-कार्पोरेट हाउसेस की परिवर्तित स्थितियों को केन्द्रित कर लिखा गया उपन्यास है। गोविंद मिश्र का नया उपन्यास 'धूल पौधों पर' दाम्पत्य की दूरियों और विवाहेतर प्रेम की कथा कहता है। इस वर्ष अनामिका के दो उपन्यास आए 'दस द्वारे का पिंजरा' तथा 'तिनका तिनके पास'—दोनों उपन्यासों में पुनरावृत्ति के कई-कई प्रसंग हैं।

भगवानदास मोरवाल का 'रेत' मेवात क्षेत्र की कंजूर जाति के रहन और सहन का उपन्यास है, उनकी जरायम पेशा वृत्ति और उनका वर्जना-मुक्त समाज किंचित् चटकारे के साथ अपनी प्रस्तुति पाता है। हरीचरन प्रकाश का उपन्यास 'एक गंधर्व का दु:स्वप्न' केवल कथ्य अपितु उससे भी अधिक अपनी शैल्पिक संरचना और अभिव्यक्ति के व्यंग्यात्मक रंग के लिए देर तक याद रहने वाला उपन्यास है।

मधु कांकरिया का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' रोचक शैली में जैन साध्वियों के जीवन के अन्तर्बाह्य में झांकता हुआ, अनेक सामाजिक और स्त्री-अस्मिता के प्रश्नों को उठाता है। उपन्यास के क्षेत्र में एक नया प्रयोग पेशे से डॉक्टर (चिकित्सक) अनुसूया त्यागी का है जिन्होंने लिंग परिवर्तन कराने वालों की 'केस हिस्ट्री' के आधार पर 'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास लिखा। किन्तु इसकी अत्यधिक वर्णनात्मकता इसे कथात्मक-संवेदन तक नहीं पहुँचने देती। चिदेन ठाकुर का 'उड़ान' उत्तराखण्ड के पहाड़ी जीवन पर केन्द्रित, अजय नावरिया का 'उधर के लोग' दलितों के जीवन पर केन्द्रित तथा राकेश कुमार सिंह का 'साधो यह मुर्दों का गाँव' जेल जीवन और देश की बीमार-सी न्याय-व्यवस्था पर केन्द्रित उपन्यास भी पठनीय है। युवा कथाकार राजेन्द्र का 'लालचन असुर और ग्लोबल गाँव का देवता' बहुत ही सशक्त उपन्यास 'नया ज्ञानोदय' (अगस्त, 2005 अंक) में प्रकाशित हुआ जो झारखण्ड की 'असुर' जनजातियों को हाशिये पर डाल देने की पर्दे के पीछे की राजनीति का सच उजागर करता हुआ बाक्साइट की खदानों में उनके संघर्षमय जीवन की कथा बहुत सूक्ष्मक और प्रामाणिकता से कहता है।

कहानी भी उपन्यास की तरह लोकप्रियता प्राप्त विधा है—पाठकीय दृष्टि से भी लेखकीय दृष्टि से भी। इस वर्ष के कहानी-सृजन पर विचार करते हुए मन इस निष्कर्ष पर टिकता-सा दिख रहा है कि इस वर्ष का कहानी साहित्य इतनी आश्वस्ति नहीं दे पाता जितना उपन्यास साहित्य। सबसे पहले ध्यान जाता है वरिष्ठ कथाकार विष्णु नागर के कथा-संग्रह 'रात-दिन' पर जो अपनी शैल्पिक उपलब्धियों से हिन्दी कहानी को एक नई ऊँचाई देता है। जया जादवानी का कहानी-संग्रह 'उससे पूछो' अपनी तरह से स्त्रीवाद का एक और पक्ष रचता है। संग्रह की कई कहानियों—'जो भी यह कथा पढ़ेगा', 'लाइन इस पार' आदि में सिंधी समाज और उनकी पारिवारिक स्थितियों का चित्रण है। दामोदर खड़से का कहानी-संग्रह 'इस जंगल में', अठारह कहानियों में समाज अपने पर्याप्त वैविध्य में मौजूद है। वरिष्ठ कथाकार वल्लभ सिद्धार्थ का 'दूसरे किनारे पर' उनकी चर्चित कहानियों का संग्रह है जिसमें 'महापुरुषों की वापसी', 'कनखजूरा', 'बंद दरवाजे', 'दुरभिसंधि' तथा 'व्यवस्था' बहुत सशक्त कहानियाँ हैं। वल्लभ सिद्धार्थ की कहानियों में राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर रूप से होती है और इसी चेतना से परिचालित हो वे अपनी कहानियों में व्यवस्था की विसंगतियों पर गहरी चोट करते हुए सामाजिक स्थितियों का सचेत आकलन करते हैं।

इस वर्ष एक महत्त्वपूर्ण और सराहनीय बात यह हुई कि देश के अग्रणी प्रकाशन-संस्थान 'भारतीय ज्ञानपीठ' ने नई कलमों, उपेक्षाकृत युवतर लेखकों-कवियों को बहुत बड़ी संख्या में उनकी प्रथम कृतियों के साथ प्रकाशित करने का सराहनीय कदम उठाया, बड़ी संख्या में नये कहानीकार, उपन्यासकार और कवि एक साथ अपनी सम्भावनापूर्ण कृतियों के साथ सामने आये।

इसी शृंखला के कुछ कहानी-संग्रहों पर चर्चा अभीष्ट है। मो० आरिफ का 'फिर कभी' के पश्चात् दूसरा कहानी-संग्रह 'फूलों का बाड़ा' आया है। उनकी 'फुर्सत', 'मौसम', 'पापा का चेहरा', 'फूलों का बाड़ा' बहुत सशक्त और चर्चित कहानियाँ हैं।

मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कुछ ही समय में इधर के कहानी-लेखन में अपना सुनिश्चित स्थान बना लिया है। उनका संग्रह 'कठपुतलियाँ' आया है जिसकी कहानियाँ 'भगोड़ा', 'परिभ्रांति', 'अवक्षेप' आदि अपने कथ्य की नयी जमीन के लिए देर तक स्मृति में बनी रहती है।

प्रभात रंजन का कहानी-संग्रह 'जानकी पुत्र' भी बहुत आश्वस्ति देने वाला है। 'जानकी पुत्र' के बहाने देश में हो रहे विकास मार्ग की गति-दुर्गति का प्रभावी अंकन करती है। अपनी पुरस्कार प्राप्त कहानी 'जिन्दगी है कि नाकामयाब है' से चर्चा में आए चंदन पाण्डेय का 'भूलना' भी उल्लेख्य संग्रह है। इसी शृंखला में प्रकाशित 'फ्रिज में औरत' (मुशर्रफ आलम जैकी), 'छावनी के घर' (अल्पना मिश्र), 'उलटबांसी' (कविता), 'आईने, सपने और वसंतसेना' (रवि बुले), 'बॉस की पार्टी' (संजय कुंदन), 'किस्सा-ए-कोहनूर' (पंखुरी सिन्हा), 'जंगल का जादू-तिल-तिल' (प्रत्यक्षा), 'बाकी धुआं रहने दिया' (राकेश मिश्र) आदि उल्लेख्य संग्रह है। इस प्रकार यह कथा-वर्ष विविध प्रकार से हिन्दी कथा-साहित्य की समृद्धि का द्योतक है।

दैनिक 'जागरण' से साभार

—डॉ० पुष्पपाल सिंह, पटियाला

पत्रिका के विषयस्तम्भ में 'तन्में मन:' में अभिव्यक्त स्वामी विवेकानन्दजी का कथन किसी भी दिशा में काम करने वाले युवक के मनोसंकल्प शुभंकर एवं कल्याणमय बनाए जाने के लिए पर्याप्त है। साहित्य के मौन साधक, विशिष्ट समीक्षक/समालोचक, संत-साहित्य मर्मज्ञ, मूर्धन्य हस्ताक्षर डॉ० रामचन्द्र तिवारी का निधन सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य जगत को स्तब्ध एवं मर्माहत करता है। नि:सन्देह 'भारतीय वाङ्मय' के लिए यह एक शाश्वत रिक्तता है।

पत्रिका नि:सन्देह हिन्दी साहित्य जगत की हिन्दीभाषी समुदाय, सरकारी खरीद का भ्रष्ट तंत्र और बाजारवाद के दोषों को व्यक्त करते हुए गागर में सागर भरती है। **—गुलशन लाल चोपड़ा**

उपनिदेशक (राजभाषा), नई दिल्ली

अत्र-तत्र-सर्वत्र

डॉ० सिंघवी पर डाक टिकट

सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता, पूर्व सांसद, लोकप्रिय राजनयिक, सम्मानित बुद्धिजीवी तथा कला-संस्कृतप्रेमी डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी की स्मृति में भारतीय डाक विभाग ने डाक टिकट जारी किया। नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर के स्टेन ऑडिटोरियम में भारत के उपराष्ट्रपति प्रो० हामिद अंसारी ने पाँच रुपए का टिकट जारी किया। लोकसभा के अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने समारोह की अध्यक्षता की।

लिखावट का कलाकार

वाराणसी। हैंडराइटिंग के आधार पर लोगों का व्यक्तित्व व व्यवहार तय किया जा सकता है। ज्योतिष जिस तरह से विज्ञान पर आधारित है, उसी तरह ग्रैफोलॉजी भी साइंस है। आज की दौड़भागवाली जिन्दगी में हर शख्स अपने कैरियर को लेकर चिन्तित है। सफलता पाने के लिए हर सम्भव प्रयास करने को तैयार है। ऐसे लोग हैंडराइटिंग में सुधार कर अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। हैंडराइटिंग में ही सफलता का मन्त्र छिपा होता है। यह दावा लिखावट-विशेषज्ञ राजेश जौहरी का है। वे बताते हैं कि भारत में इस तरह के विशेषज्ञ 20 से ज्यादा नहीं हैं। विदेशों में हैंडराइटिंग के जानकारों की बहुत माँग है। विदेशों में कम्पनियाँ अपने स्टॉफ की नियुक्ति से पहले उसकी हैंडराइटिंग का अध्ययन कराती हैं। देखा जाता है कि कर्मचारी का व्यक्तित्व कम्पनी के लिए कितना फायदेमंद होगा। उन्होंने बताया कि अंग्रेजी वर्णमाला के आधार पर ही विश्लेषण किया जाता है। अंग्रेजी कापी की तीन लाइन को आधार मानकर जानकारी दी जाती है। ऊपर की लाइन भविष्य, बीच की वर्तमान और नीचे की लाइन अतीतकाल को दर्शाती है। लिखावट में व्यक्ति अक्षरों को किस हिसाब से पेश करता है, वह उसके मूड व मानसिकता पर निर्भर करता है। एक जैसी लिखावट कोई आदमी दूसरी बार नहीं लिख पाता। शोध के आधार पर दावा किया कि एक हस्ताक्षर दूसरी बार वैसा ही नहीं हो सकता। हर बार कुछ न कुछ बदलाव होगा। लगभग साढ़े तीन करोड़ बार लिखने के बाद वैसा हस्ताक्षर हो सकता है। हस्ताक्षर यानी आपका नेचर, जिसमें सब कुछ शामिल होता है, व्यक्ति के हर राइटिंग स्ट्रोक्स में कुछ न कुछ होता है। लिखावट से धैर्य, संतुलन व एकाग्रता झलकती है। हस्ताक्षर के दौरान पूरा नाम लिखनेवाले काफी महत्त्वाकांक्षी होते हैं। अंग्रेजी के अक्षरों को ऊपर की ओर खींचकर लिखनेवाले सकारात्मक सोच के माने जाते हैं। नीचे की ओर लिखना व्यक्ति के मन में हीन भावना को दर्शाता है। कुछ लोग छोटे अक्षरों में लिखते हैं यानी उनका हर कदम संभलकर होता है। ओवरराइटिंग से व्यक्ति के दुविधाग्रस्त मन की झलक मिलती है। आज आवश्यकता है कि अभिभावक व शिक्षक बच्चों को सुन्दर हैंडराइटिंग के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दें।

इग्नू का विकलांगता प्रबन्धन में पीजी डिप्लोमा

नई दिल्ली। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने भारतीय पुनर्वास परिषद के सहयोग से विकलांगता प्रबन्धन में एक साल का पीजी डिप्लोमा कोर्स शुरू किया है।

जी चाहे जिस विश्वविद्यालय में पढ़ें

नई दिल्ली। अब छात्र एक ही पाठ्यक्रम के दौरान मनपसन्द विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर सकेंगे यानि दाखिला किसी विश्वविद्यालय में और पढ़ाई किसी और विश्वविद्यालय में कर सकेंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) इसके अलावा छात्रों को यह भी अधिकार देना चाहता है कि वे अपने अध्यापकों के रिपोर्ट-कार्ड तैयार करें। छात्र बताएँ कि उनके अध्यापकों में से कौन अपने विषय में कितना पारंगत है। विश्वविद्यालयों के शैक्षिक ढाँचे को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने के लिए यूजीसी की समिति ने 'लीक से हटकर' सिफारिशें की हैं। यह सिफारिशें मानी जाएँगी या नहीं, यह शैक्षिक संस्थानों को तय करना है।

महात्मा गाँधी का लेख अब कोई भी छाप सकेगा

अहमदाबाद। महात्मा गाँधी के साहित्य पर नवजीवन ट्रस्ट का कापीराइट 1-1-09 को खत्म हो गया। अब कोई भी प्रकाशक उनके साहित्य का प्रकाशन कर सकता है। 1957 के भारतीय कापीराइट अधिनियम के अनुसार किसी लेखक की मृत्यु के बाद अगले 60 साल तक कापीराइट रहता है।

महात्मा गाँधी नहीं चाहते थे कि उनके लिखे का कोई कॉपीराइट हो। उन्होंने इस शर्त पर 1944 में नवजीवन मुद्रणालय को अपने लेखन का कॉपीराइट दिया कि उससे होनेवाली आय समाज के वंचित तबकों के लिए होगी। इस वर्ष के शुरू में यह कॉपीराइट खत्म हो गया और नवजीवन ट्रस्ट भी नहीं चाहता कि सरकार हस्तक्षेप करके कॉपीराइट की अवधि बढ़ाए। यह गाँधीजी की इच्छा के अनुरूप ही होगा कि उनके विचारों का मुक्त रूप से प्रचार-प्रसार हो, हालांकि अभी तक गाँधीजी के लेखन का भरपूर प्रसार हुआ है। उनकी आत्मकथा की सैंतीस लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं और 'मेरे सपनों का भारत' और 'हिन्द स्वराज', 'हिन्दू धर्म क्या है' प्रकाशन भी बहुत लोकप्रिय हैं। दुनिया में हर नई चुनौती के साथ गाँधीजी की प्रासंगिकता बढ़ती है और नई पीढ़ियाँ नए सिरे से गाँधीजी के लेखन में उन चुनौतियों के हल के लिए सूत्र तलाशती हैं। एक समस्या यह है कि हालांकि गाँधीजी ने पुस्तकें पाँच ही लिखी हैं लेकिन उनके लेख, पत्र आदि सौ खण्डों के सम्पूर्ण गाँधी वांड्मय में संग्रहित हैं। विशिष्ट विषयों पर उनके विचारों की कई सम्पादित किताबें हैं लेकिन अब भी संक्षिप्त और सुसम्पादित किताबों की जरूरत है। जाहिर है प्रकाशकों की रुचि अपक्षाकृत छोटे संकलनों में ही होगी, मगर वे योग्य विद्वानों के सम्पादन में अच्छे संकलन निकालें तो वे लोकप्रिय भी होंगे और उपयोगी भी।

पुस्तक प्रकाशन में पीजी डिप्लोमा कोर्स

नई दिल्ली। देश का प्रकाशन उद्योग गति पकड़ रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) अब पुस्तक प्रकाशन पर विशेष कोर्स शुरू करने जा रहा है।

भारतीय प्रकाशक संघ के साथ इग्नू ने पुस्तक प्रकाशन पर पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स तैयार किया है। इस कोर्स के जरिए छात्र प्रकाशन व्यवसाय के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलुओं से परिचित होंगे। अपनी तरह के देश के इस पहले कोर्स की पढ़ाई शीघ्र ही शुरू होने की सम्भावना है। इग्नू के कुलपति प्रोफेसर वी०एन० राजशेखरन ने बताया कि मुक्त विश्वविद्यालय सम्बन्धित कोर्स करनेवाले छात्रों को प्रकाशन उद्योग में रोजगार दिलाने में भी मदद करेगा। किसी मान्यताप्राप्त यूनिवर्सिटी में स्नातक की उपधि प्राप्त करने वाले छात्र नए कोर्स में दाखिला ले सकेंगे। यह कोर्स एक से पाँच साल के भीतर पूरा किया जा सकेगा।

भारतीय लेखक का कमाल

इलाहाबाद। जिस 'स्लमडाग मिलियनेयर' ने आस्कर का पायदान समझे जानेवाले गोल्डन ग्लोब के चार अवार्ड के साथ पूरी दुनिया में धूम मचा दी है, उसके निर्देशक डैनी बायल ने फिल्म स्लमडाग मिलियनेयर की पटकथा भारतीय राजनयिक विकास स्वरूप के उपन्यास 'क्यू एण्ड ए' से ली है। विकास स्वरूप इलाहाबाद हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता विनोद स्वरूप के पुत्र हैं। इस समय प्रिटोरिया में भारतीय उप-उच्चायुक्त विकास स्वरूप का पहला उपन्यास है 'क्यू एण्ड ए'। वर्ष 2005 में प्रकाशित 'क्यू एण्ड ए' एक ऐसे युवक राम मुहम्मद थामस की कहानी है जो झुग्गी में रहने वाला एक वेटर होता है। कौन बनेगा करोड़पति सरीखे क्विज शो का वह विजेता बन जाता है। यह उपन्यास 33 भाषाओं में प्रकाशित हुआ है। हिन्दी में इसका अनुवाद कौन बनेगा अरबपति? के रूप में हुआ है। यह उपन्यास दुनिया में बेस्ट सेलर के रूप में चर्चित हुआ था जिससे इन्हें एक करोड़ की रायल्टी मिली। इलाहाबाद में जन्मे और पले-बढ़े विकास स्वरूप ने वर्ष 1986 में भारतीय विदेश सेवा में प्रवेश किया था। पिछले साल 28 जुलाई को

विकास स्वरूप का दूसरा उपन्यास आया 'सिक्स सस्पेक्ट्स'।

12 राज्यों में पढ़ाई जाएँगी एनसीईआरटी की पुस्तकें

नई दिल्ली। देश भर के स्कूलों में पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम के तहत 12 राज्यों के सरकारी स्कूलों के छात्र आगामी शैक्षणिक सत्र से सम्बन्धित राज्य की पाठ्य पुस्तकों की जगह अब एनसीईआरटी की पुस्तकें पढ़ेंगे। इसके साथ ही देश भर में उच्चतर माध्यमिक स्तर के 31.3 फीसदी छात्र एनसीईआरटी द्वारा तैयार पुस्तकों का अध्ययन करेंगे। नेशनल काउंसिल फार एजूकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग (एनसीईआरटी) ने अपनी पाठ्य पुस्तकों के इस्तेमाल के सम्बन्ध में 12 राज्यों के सम्बन्धित राज्य बोर्ड के स्कूलों को कॉपीराइट की मंजूरी दे दी है। जिन राज्यों को कॉपीराइट के इस्तेमाल की मंजूरी दी गई है, उनमें आन्ध्र प्रदेश, दिल्ली, झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, केरल, पंजाब और गोवा शामिल हैं।

शिक्षण संस्थानों के विवाद निबटाने के लिए ट्रिब्यूनल

नई दिल्ली। सरकार ने देश भर के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के परिसरों में शिक्षकों और प्रशासन के बीच विवादों के निबटारे के लिए विशेष ट्रिब्यूनल गठित करने की योजना बनाई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में उच्च शिक्षा सचिव आर०पी० अग्रवाल की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया है जिसे शैक्षणिक परिसरों में विशेष ट्रिब्यूनल की रूपरेखा के बारे में सुझाव देना है। समिति के एक सदस्य ने कहा कि शैक्षणिक परिसरों में शिक्षकों और प्रबन्धन या प्रशासन के बीच विवादों के मामले में वृद्धि को देखते हुए यह कदम अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

भारत की विरासत

नई दिल्ली। हम अपनी हर चीज की आलोचना करने के आदी हो गए हैं, चाहें वह राज्य व्यवस्था हो या शिक्षा व्यवस्था। विदेश हमारी विरासत को उत्साहपूर्वक ग्रहण कर रहे हैं। उदाहरण जापान का है। जापानी अभिभावक अपने बच्चों को भारतीय स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज रहे हैं। यह सिलसिला अब इतना तेज हो गया है कि कई स्कूल अपने विस्तार को सोच रहे हैं।

तेजी से उभर रहे अपने एशियाई प्रतिद्वंद्वियों भारत और चीन से प्रतिस्पर्धा में पिछड़ते जाने के कारण जापान आत्मविश्वास की कमी की समस्या से जूझ रहा है। यहाँ तक कि वहाँ के लोगों का अपने शिक्षा-तन्त्र से विश्वास उठ चुका है। उनका मानना है कि आने वाले दिनों में भारत शिक्षा की महाशक्ति बन कर उभरेगा।

जापान में भारतीयों द्वारा संचालित कई स्कूलों में हमारे पाठ्यक्रम, भाषा एवं संस्कृति का ज्ञानार्जन कराया जा रहा है। कभी लगातार अंतरराष्ट्रीय स्तर के टेस्ट में बच्चों को पहचान दिलाने वाले जापानी शिक्षातन्त्र से लोगों का विश्वास डिग गया है। भारतीय स्कूलों में जापानी छात्रों की बाढ़-सी आई हुई है।

हिटलर का पुस्तक-प्रेम

दुनिया के सर्वाधिक भयावह नस्लीय नरसंहार के सूत्रधार जर्मन तानाशाह एडोल्फ हिटलर को किताबों से नफरत के लिए भी जाना जाता है, लेकिन सच यह है कि वह प्रतिबद्ध अध्येता था। उन्हें रोजाना कम से कम एक किताब पढ़े बगैर मानसिक सुकून नहीं मिलता था। एक नई पुस्तक में इसका उल्लेख किया गया है।

जाने-माने इतिहासकार टिमोथी डब्ल्यू० रिबैक ने अपनी पुस्तक 'हिटलर प्राइवेट लाइब्रेरी : द बुक्स दैट शेप हिज लाइफ' में लिखा है कि हिटलर के पास 16 हजार पुस्तकें थीं और उसे अंग्रेजी साहित्य के महान रचनाकार विलियम शेक्सपियर की रचनाएँ सर्वाधिक पसन्द थीं। इस पुस्तक में लेखक ने लिखा है, ''कोई बड़ा पुस्तक-प्रेमी ही इतनी बड़ी संख्या में पुस्तकें रख सकता है। हिटलर के पास विख्यात दार्शनिकों, इतिहासकारों, कवियों, नाट्य लेखकों और उपन्यासकारों की पुस्तकों का विशाल संग्रह था।''

'संडे टाइम्स' में इस पुस्तक के रोचक अंशों को प्रकाशित किया गया है। इसमें लिखा गया है, ''हिटलर हर रात कम से कम एक पुस्तक जरूर पढ़ता था। कई बार तो वह एक से ज्यादा पुस्तकें पढ़ डालता था।'' टिमोथी की यह रोचक पुस्तक अगले महीने ब्रिटेन में प्रकाशित होगी।

प्राचीन शारदा लिपि

भारत की 2200 वर्ष पुरानी लिपि है। धरती का स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर में वह पली-बढ़ी। उस लिपि में लिखी गई पांडुलिपियाँ आज भी कश्मीर में रामायण व गीता की तरह पूजी जाती हैं। यूरोपीय देशों ने उसे अपने पुस्तकालयों में बड़े जतन से सहेज रखा है। धायकू नाम के एक कश्मीरी ने अपनी जमीन बेचकर पांडुलिपियों को विदेशी हाथों में जाने से रोकने की कोशिश की। देवनागरी लिपि ने उसके सामने जन्म लिया लेकिन समय का पहिया कुछ ऐसा घूमा कि आज उसी 'शारदा लिपि' को उसके अपनों (कश्मीरी व अन्य भारतीयों) ने ही बिसरा दिया है। भारत में शारदा लिपि के एकमात्र विशेषज्ञ माने जाने वाले 82 वर्षीय प्रो० त्रिलोकी नाथ गंजू को बहुत मलाल है कि कश्मीर में पूजी जाने वाली शारदा लिपि वर्तमान में अंधकार की भेंट चढ़ गई है। कश्मीर विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान (डिस्क्रिप्टिव) के प्रोफेसर रह चुके टीएन गंजू ने बताया कि वर्तमान में दुनिया भर के संग्रहालयों व विश्वविद्यालयों में शारदा लिपि में लिखी गई चार लाख से अधिक पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। सबसे पुरानी पांडुलिपि बर्लिन के पुस्तकालय में मौजूद है। इस लिपि में वैदिक, पौराणिक व बौद्ध दर्शन के अनेक अन्य ग्रन्थ हैं। कल्हण द्वारा रचित काव्यग्रंथ 'राजतरंगिणी' की कई संततियाँ शारदा में ही लिखी गई हैं। प्रो० गंजू के अनुसार कश्मीर का पौराणिक नाम शारदा देश है। महाभारत में कश्मीरियों को शारदा देशीय कहा गया है। शारदा लिपि 2200 वर्ष पुरानी है, इसका सबसे बड़ा साक्ष्य यह है कि सम्राट अशोक का जब हृदय परिवर्तन हुआ तो वह कश्मीर आए थे। उस समय बौद्ध धर्म का ज्ञान-विज्ञान कश्मीर में काफी आगे बढ़ चुका था जिसे शारदा लिपि में ही लिखा गया था। कुषाण साम्राज्य के दौरान भी बौद्धों की चौथी संगति (संगोष्ठी) इसीलिए कश्मीर में आयोजित की गई थी। प्रो० गंजू को इस बात का अत्यन्त दुःख है कि कश्मीर के विभिन्न पुस्तकालयों में शारदा लिपि में लिखे आठ हजार से अधिक ग्रन्थ मौजूद हैं लेकिन पिछले 20 वर्षों से उसे पढ़ने वाले वह एकमात्र व्यक्ति हैं।

तिब्बती संस्थान अब सेंट्रल यूनिवर्सिटी

वाराणसी। वाराणसीस्थित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान को अब 'सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ तिब्बतन स्टडीज' के नाम से जाना जाएगा। 15 जनवरी 2009 को तिब्बतियों के धर्मगुरु दलाई लामा ने स्वयं संस्थान के परिवर्तित विश्वविद्यालय नाम वाले पट्ट का अनावरण अतिशा हाल में किया। तिब्बती संस्थान की स्थापना वर्तमान दलाई लामा और तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री के आपसी बातचीत के बाद वर्ष 1967 में की गई थी। उस वक्त यह सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के अधीन अध्ययन केन्द्र हुआ करता था। वर्ष 1977 में केन्द्र सरकार की ओर से इसे स्वतन्त्र अध्ययन संस्थान के रूप में घोषित किया गया और समस्त खर्च सरकार वहन करने लगी।

दिनकर का तैल-चित्र संसद में

संसद के केन्द्रीय कक्ष में प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने संसदविद्, शिक्षाविद्, चिंतक एवं साहित्यकार राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के तैल-चित्र का विमोचन किया।

स्मृतिशेष

पूर्व राष्ट्रपति आर० वेंकटरमन का निधन

पूर्व राष्ट्रपति **आर वेंकटरमन** का 27 जनवरी को दिल्ली में निधन हो गया। 98 वर्षीय पूर्व राष्ट्रपति ने दोपहर 2.30 बजे अन्तिम साँस ली। 28 जनवरी को दिल्ली में एकता स्थल पर शाम साढ़े चार बजे उनका अन्तिम संस्कार हुआ।

सम्मान-पुरस्कार

उ०प्र० हिन्दी संस्थान की पुरस्कार-घोषणा

डॉ० केदारनाथ सिंह को भारत-भारती सम्मान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने प्रख्यात कवि **डॉ० केदारनाथ सिंह** को वर्ष 2007 का '**भारत-भारती सम्मान**' देने का निर्णय किया है। इस सम्मान के साथ 2.51 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती है। उन्हें इसके पूर्व साहित्य अकादमी पुरस्कार व व्यास सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। इसके साथ ही वर्ष 2008 के लिए मधु लिमये स्मृति पुरस्कार, विश्वविद्यालय स्तरीय पुरस्कार तथा वर्ष 2005 में प्रकाशित पुस्तकों पर नामित व सर्जना पुरस्कारों की भी घोषणा कर दी गयी है।

वर्ष 2007 के लिए *दो लाख रुपये पुरस्कार राशिवाले* हिन्दी संस्थान के अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों में **डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** को 'हिन्दी गौरव सम्मान', **रवीन्द्र कालिया** को 'लोहिया साहित्य सम्मान', **डॉ० बाल शौरि रेड्डी** को 'महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान', **डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक** को 'पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान', **शान्ति सहाय** '**नालिनी**' को 'अवन्ती बाई सम्मान' देने का निर्णय लिया गया है। *एक लाख रुपये पुरस्कार राशि वाले* 'मधु लिमये स्मृति पुरस्कार' के लिये **आचार्य डॉ० बाबूलाल गर्ग** को चुना गया है।

इसी क्रम में *एक लाख रुपये पुरस्कार राशिवाले* 'लोक भूषण सम्मान' के लिए **डॉ० मालती शर्मा**, 'कला भूषण सम्मान' के लिए **हरिपाल त्यागी**, 'विद्या भूषण सम्मान' के लिए **प्रो० अंगने लाल**, 'विज्ञान भूषण सम्मान' के लिए **डॉ० लक्ष्मीकान्त शंखधर**, 'पत्रकारिता भूषण सम्मान' के लिए **डॉ० रमाकान्त श्रीवास्तव**, 'प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान' के लिए **डॉ० विनोद बाला अरुण** तथा 'बाल साहित्य भारती सम्मान' के लिए **कल्पनाथ सिंह** व **डॉ० सरोजनी कुलश्रेष्ठ** को चुना गया है।

पच्चीस हजार रुपये के 'हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान' के लिए **डॉ० शैल अग्रवाल** का चयन किया गया है। *पच्चीस हजार रुपये* के 'विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान' के लिए **डॉ० आदित्य प्रचंडिया** व **डॉ० परशुराम पाल** का चयन किया गया है।,

एक लाख रुपये पुरस्कार राशिवाले 'साहित्य भूषण सम्मान' के लिए **राम प्रवेश शास्त्री, डॉ० श्योराज सिंह बेचैन, डॉ० प्रताप नारायण टंडन, नरेश सक्सेना, डॉ० राम शिरोमणि 'होरिल', डॉ० नित्यानंद तिवारी, डॉ० परमानन्द जड़िया, डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर,** मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक **कैलाश चंद्र पंत** व **डॉ० रामाश्रय सविता** को चुना गया है।

एक लाख एक हजार रुपये के 'सौहार्द सम्मान' के लिए **गुरुचरण सिंह** (पंजाबी), **चित्र महंत** (असमियां), **डॉ० उषा घनश्यामभाई उपाध्याय** (गुजरात), **डॉ० आर० सुरेन्द्रम** (मलयालम), **एचवी रामचंद्रराव** (कन्नड़), **कामाक्षी सुब्रह्मण्यम** (तमिल), **आचार्य आदेश्वर राय** (तेलुगु), **डॉ० उमारमण झा** (मैथिली), **डॉ० ब्रज सुंदर पाढ़ी** (उड़िया), **डॉ० सूर्य नारायण रणसुभे** (मराठी) व **चंद्रकांता** (कश्मीरी) का चयन किया गया है।

हिन्दी संस्थान ने वर्ष 2005 में प्रकाशित पुस्तकों पर *बीस हजार रुपये* के **नामित पुरस्कारों** की घोषणा भी कर दी है। इनमें **संजीव जायसवाल 'संजय'** को 'सूर पुरस्कार', **शिवजी पाण्डेय 'रसराज'** को 'राहुल सांकृत्यायन', **डॉ० आरबी सिंह** व **डॉ० अमर बहादुर सिंह** को 'कबीर', **रामशंकर पाण्डेय नवल** को 'तुलसी', **डॉ० राजकुमार सिंह शर्मा** को 'भारतेन्दु', **डॉ० एसपी गुप्ता** को 'मोतीलाल नेहरू', **डॉ० भगवान शरण भारद्वाज** को 'भगवान दास', **डॉ० इंद्रदत्त पाण्डेय** को 'महावीर प्रसाद द्विवेदी', **डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय** को 'बीरबल साहनी', **दामोदर दत्त दीक्षित** को 'प्रेमचंद', **केशव प्रसाद वाजपेयी** को 'जयशंकर प्रसाद', **हरपाल सिंह 'अरुष'** को 'रामचंद्र शुक्ल', **डॉ० हेरम्ब चतुर्वेदी** को 'आचार्य नरेन्द्र देव', **डॉ० दरखशां ताजकर** को 'पुरुषोत्तम दास टंडन', **मधुकर अस्थाना** को 'निराला', **कुश चतुर्वेदी** को 'बाबूराव विष्णु पराड़कर', **डॉ० ऋचा शुक्ला** को 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', **डॉ० विक्रम सिंह** को 'यशपाल', **डॉ० रामबहादुर मिश्र** को 'पं० राम नरेश त्रिपाठी', **सुशीला जोशी** को 'अज्ञेय', **कमल नयन पाण्डेय** को 'सरस्वती', **डॉ० वर्षा आलोक** को 'महादेवी वर्मा', **डॉ० भालचंद्र तिवारी** को 'पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी' तथा **सुमति दुबे** को 'विजयदेव नारायण साही' पुरस्कार के लिए चुना गया है।

वर्ष 2005 में प्रकाशित पुस्तकों पर दिये जाने वाले *आठ हजार रुपये* के **सर्जना पुरस्कारों** में **संजीव जायसवाल 'संजय'** को 'सोहनलाल द्विवेदी', **राजेश्वर मधुकर** को 'भिखारी ठाकुर', **घनानंद पाण्डेय 'मेघ'** को 'नजीर अकबराबादी', **मनमोहन** को 'अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डॉ० रामहित त्रिपाठी को 'नंदकिशोर देवराज', **डॉ० पशुपति नाथ उपाध्याय** को 'गुलाब राय', **डॉ० मुनीश गंगवार/डॉ० एच०पी० चौधरी/इखलाक हैदर/डॉ० ए०पी० सिंह** को 'आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी', **डॉ० रजनी गुप्त** को 'अमृतलाल नागर', **वीरेन्द्र बहादुर सिंह 'कुसुमाकर'** को 'आनन्द मिश्र', **डॉ० निशा गहलौत** को 'रामविलास शर्मा', **शिव प्रसाद 'कमल'** को 'ईश्वरी प्रसाद', **डॉ० ब्रह्म मिश्र** को 'बलबीर सिंह 'रंग', **डॉ० योगेश** को 'डॉ० रांगेय राघव', **डॉ० भालचंद्र तिवारी** को 'रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी', **जाकिर अली 'रजनीश'** को 'बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस', **शिवशंकर मिश्र** को 'जगदीश गुप्त', काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के **श्रीप्रकाश शुक्ल** को 'धर्मयुग', **अलका प्रसाद** को 'विद्यावती कोकिल', **डॉ० सुरेन्द्र वर्मा** को 'शरद जोशी' व **हरिनारायण तिवारी** को 'नरेश मेहता' पुरस्कार शामिल है।

मन्नू भण्डारी को व्यास सम्मान

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन का 2.5 लाख रुपये का प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' (वर्ष 2008 के लिए) मूर्धन्य साहित्यकार **मन्नू भण्डारी** को उनकी आत्मकथा कृति 'एक कहानी यह भी' के लिए दिया गया है।

बिरला पुरस्कारों की घोषणा

नई दिल्ली। कृष्ण कुमार बिरला फाउंडेशन ने वर्ष 2008 के लिए दिये जानेवाले तीन पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। फाउंडेशन के निदेशक निर्मलकांति भट्टाचार्जी के अनुसार वाचस्पति पुरस्कार डॉ० हरिनारायण दीक्षित को उनके महाकाव्य 'राधाचरित्रम्' के लिए दिया जाएगा। राजस्थान के रचनाकारों के विशिष्ट पुरस्कारों की श्रेणी वाला बिहारी पुरस्कार नंद भारद्वाज को उनके काव्य संग्रह 'हरी दूब का सपना' के लिए और शंकर पुरस्कार देवेन्द्रराज अंकुर को उनकी पुस्तक 'रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र' के लिए दिया जाएगा।

नरेश मेहता पुरस्कार श्री बी०बी० कुमार को

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान दिल्ली के प्रख्यात शिक्षाविद् और वैचारिक पत्रिका 'चिन्तन-सृजन' तथा 'डायलॉग' के सम्पादक **डॉ० बी०बी० कुमार** को प्रदान किया गया। ज्ञान विज्ञान के साहित्येतर विषयों पर हिन्दी में उल्लेखनीय मौलिक लेखन के अन्तर्गत दिये जाने वाले इस सम्मान में शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र के साथ ही श्री कुमार को रुपये 31000/- (इकतीस हजार रुपये) की राशि भेंट की गयी।

'अराजक उल्लास' के लिए कृष्ण बिहारी को सम्मान

भारतीय लेखक शिविर के अन्तिम दिन साहित्यकार **डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र** को उनकी कृति 'अराजक उल्लास' को प्रथम 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान' दिया गया। इसी क्रम में पण्डित विद्यानिवास मिश्र की पत्नी श्रीमती राधिका देवी की स्मृति में विद्याश्री न्यास की मासिक पत्रिका 'चिकीतुषी' का लोकार्पण किया गया।

प्रो० शर्मा को चातुर्वेद ज्ञानगौरव सम्मान

वाराणसी। चातुर्वेद संस्कृत प्रचार संस्थान द्वारा **प्रो० हृदयरंजन शर्मा** को सर्वोच्च चातुर्वेद ज्ञानगौरव सम्मान प्रदान किया गया। डॉ० मंगला पाण्डेय, डॉ० रामप्रकाश पाण्डेय, डॉ० रंजना त्रिपाठी. डॉ० रीना सिंह और सुनील सिंह को संस्कृत सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया।

रमाकांत स्मृति समारोह

गाँधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार में रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार समिति द्वारा समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें 11वें रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार से **उमाशंकर चौधरी** को वरिष्ठ कथाकार रवीन्द्र कालिया द्वारा सम्मानित किया गया।

रामकिशोर दाहिया का सम्मान

सम्राट साहित्य परिषद्, कटनी द्वारा सम्राट सारस्वत सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें नवगीतकार रामकिशोर दाहिया को सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर दाहिया के नवगीत संग्रह 'अल्पना अंगार पर' का लोकार्पण किया गया।

जुगल किशोर जैथलिया सम्मानित

इटावा में आयोजित समारोह में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री एस०एल० नरसिम्हन ने समाजसेवी-साहित्यकार तथा कोलकाता के बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया को उनकी विशिष्ट हिन्दी सेवा हेतु 'आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री हिन्दी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया।

हिमांशु जोशी सम्मानित

पटना में आयोजित समारोह में कथाकार श्री हिमांशु जोशी को 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र, शॉल और एक लाख रुपए की राशि प्रदान की गई।

पण्डित कृष्णमूर्ति घनपाठी को घन परायण सम्मान

वाराणसी। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा वर्ष 1985 में वेद पण्डित पुरस्कार तथा महाराजा काशी नरेश द्वारा वैदिक रत्न से सम्मानित पण्डित कृष्णमूर्ति घनपाठी को महाराष्ट्र के दक्षिण भारतीय समाज ने घन परायण सम्राट के सम्मान से नवाजा है। मुंबई में यह सम्मान उन्हें मिला। वहाँ से लौटने पर उन्होंने बताया कि उन्हें पुरस्कारस्वरूप स्वर्ण कंगन तथा स्वर्ण अंकित घन परायण सम्राट पुष्प और अंगवस्त्रम मिले हैं।

कबीर पुरस्कार

अवकाशप्राप्त आईआरएसई अधिकारी आर०पी० सिंह और युवा पत्रकार डॉ० अमर बहादुर सिंह को उनकी पुस्तक 'राष्ट्रीय एकता और भारत' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा कबीर पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गयी है।

राष्ट्रधर्म सम्मान

साहित्यिक अनुष्ठान, लखनऊ में सम्मान-अर्पण-समारोह आयोजित किया गया। राष्ट्रधर्म प्रकाशन के यशस्वी निदेशक श्री कृष्णदास माहेश्वरी की स्मृति में स्थापित अहिन्दीभाषी क्षेत्र के दो हिन्दीसेवियों डॉ० विजय राघव रेड्डी व डॉ० एम०एस० कृष्णमूर्ति 'इंदिरेश' को इक्कीस हजार रुपए का 'राष्ट्रधर्म हिन्दी सेवा-सम्मान-2008' प्रदान किया गया। श्री भाऊराव देवरस को समर्पित दस हजार का 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान-2008' डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ (वे दिन और वे लोग) व डॉ० सुधेश (भटकते पाँव) को दिया गया। श्री राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अ०भा० हिन्दी कहानी प्रतियोगिता-2008 का प्रथम पुरस्कार (सात हजार रुपए) अंजु दुआ जैमिनी की कहानी 'मजबूर कौन?' को, द्वितीय पुरस्कार (पाँच हजार रुपए) कृतिका केसरी की कहानी 'आ अब लौट चलें' को, तृतीय पुरस्कार (तीन हजार रुपए) डॉ० निरुपमा राय की कहानी 'जनता दरबार' को, प्रोत्साहन पुरस्कार (पन्द्रह सौ रुपए) कल्पना कुलश्रेष्ठ की कहानी '.....और परी चली गई', डॉ० अमिता दुबे की कहानी 'अस्तित्व' एवं श्री ओमप्रकाश मिश्र की कहानी 'छुट्टी' को प्रदान किए गए।

सितारा देवी व भूपेन हजारिका को अकादमी रत्न

संगीत नाटक अकादमी ने नृत्यांगना सितारा देवी और संगीतकार भूपेन हजारिका समेत कला क्षेत्र की चार हस्तियों को अकादमी रत्न देने की घोषणा की है। इन हस्तियों को संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। इनके अलावा संगीत, नृत्य और रंगमंच के 34 अन्य कलाकारों को वर्ष 2008 के अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है।

प्रो० युगेश्वर को रामानंदाचार्य पुरस्कार

साहित्यकार व भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ प्रोफेसर युगेश्वर को स्वामी रामानंदाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जगद्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य ने एक लाख रुपये का प्रतिष्ठापरक सम्मान उन्हें प्रदान किया।

विमला देवी सम्मान, द्विजदेव सम्मान एवं आमिल स्मृति सम्मान 2007-2008

विमला देवी फाउण्डेशन न्यास, अयोध्या, प्रतिवर्ष संगीत एवं साहित्य के क्षेत्रों में क्रमश: 'विमला देवी सम्मान' तथा 'द्विजदेव सम्मान' प्रदान करता है। इन दो पुरस्कारों के अतिरिक्त न्यास समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'आमिल स्मृति सम्मान' भी अर्पित करता है।

इस वर्ष का 'विमला देवी सम्मान' प्रख्यात रुद्रवीणा वादक उस्ताद श्री असद अली ख़ाँ (नयी दिल्ली), साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला 'द्विजदेव सम्मान' कवयित्री एवं उपन्यासकार श्रीमती अनामिका (नयी दिल्ली) एवं समाज सेवा के क्षेत्र में 'आमिल स्मृति सम्मान' आदिवासी भाषाओं एवं संस्कृतियों के पोषण एवं उन्नयन के लिए कार्यरत सुचर्चित समाज सेवक श्री गणेश देवी (बड़ौदा) को अयोध्या में प्रदान किया जायेगा।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार (वर्ष 2006 हेतु)

विगत 7 जनवरी को नई दिल्ली में एक समारोह में सूचना प्रसारण एवं विदेश राज्यमंत्री श्री आनंद शर्मा ने राजस्थान पत्रिका के समाचार सम्पादक **श्री श्याम माथुर** को 'फिल्म पत्रकारिता के विविध आयाम' पुस्तक के लिए पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में वर्ष 2006 के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कारों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप उन्हें 35 हजार रुपये नकद और प्रशस्ति-पत्र दिए गए। **श्री हर्षदेव** को उनकी पुस्तक 'सामयिक मीडिया शब्दकोश' के लिए द्वितीय पुरस्कार, **श्री सीताराम खोड़वाल** को उनकी कृति 'हिन्दी जनसंचार और प्रेमचंद का जागरण मंच' के लिए तृतीय पुरस्कार दिया गया। **मुरली मनोहर मंजुल** को उनकी पुस्तक 'आकाशवाणी की अंतरकथा', **नरेन्द्र सिंह यादव** को 'ग्राफिक डिजाइन', **डॉ० स्मिता मिश्रा** और **डॉ० अमरनाथ** को 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बदलते आयाम', **श्री प्रभु झिंगरन** को 'सचित्र मीडिया शब्दावली' और **श्री धनंजय चोपड़ा** को 'सिर्फ समाचार' हेतु सांत्वना पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। महिला मुद्दों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार **डॉ० अनामिका** को 'मन माँझने की जरूरत' और द्वितीय पुरस्कार **श्रीमती लता शर्मा** को 'औरत अपने लिए' हेतु दिया गया। बाल साहित्य श्रेणी में 15 हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार **श्रीरामशंकर** को उनकी पुस्तक 'अंतरिक्ष का स्वप्निल लोक' और द्वितीय पुरस्कार **श्री हरीश कुमार** को उनकी पाण्डुलिपि 'ईमानदारी का स्वाद' हेतु दिया गया।

पुरस्कार हेतु कृतियाँ आमन्त्रित

'निर्मल पुरस्कार' हेतु वर्ष 2007-08 के बीच प्रकाशित गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत तथा आत्मकथा विधाओं में से निर्णायक मण्डल द्वारा चुनी गई कृति पर पन्द्रह हजार रुपए की राशि का पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र अथवा गुजरात में जनमे साहित्यकार को ही दिया जाएगा। कृति की चार प्रतियाँ 31 मार्च, 2009 तक—श्री सुरेश कुमार श्रॉफ, 19, श्रीनगर कॉलोनी, इंदिरा कॉलोनी के पीछे, बुरहानपुर (म०प्र०) के पते पर भेजी जा सकती हैं।

स्मृति-शेष

प्रोफेसर विजयपाल सिंह

'केशव और उनका साहित्य' तथा 'केशव का आचार्यत्व' रचनाओं से साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात साहित्यकार व आलोचक **प्रोफेसर विजयपाल सिंह** का 29 दिसम्बर 2008 को निधन हो गया। वह लगभग 90 वर्ष के थे। प्रोफेसर सिंह ने डॉ० जगन्नाथ तिवारी एवं डॉ० हरवंशलाल शर्मा जैसे विद्वानों से हिन्दी के उच्चस्तरीय अध्ययन की दीक्षा ली। एटा के बनवारीपुर गाँव में जन्में प्रोफेसर सिंह ने आगरा कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, तिरुपति के वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। वर्ष 1969 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आचार्य एवं अध्यक्ष नियुक्त हुए और 1983 तक लगातार इस पद पर बने रहे। वे दो बार कला संकाय के डीन भी रहे। जब वह विभागाध्यक्ष थे उस समय डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान भी विभाग में थे।

भोजपुरी के गौरव मोती बीए

प्रथम भोजपुरी साहित्य अकादमी पुरस्कार (2001) से सम्मानित भोजपुरी के पुरोधा, भोजपुरी और हिन्दी गीतों के प्रख्यात गीतकार, सरस कवि, फिल्म अभिनेता, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी 90 वर्षीय मोतीलाल उपाध्याय (मोती बीए) का 18 जनवरी को बरहज (देवरिया) स्थित निवास पर निधन हो गया। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी 1 अगस्त 1919 को देवरिया के ग्राम बरेजी में पं० राधाकृष्ण उपाध्याय के द्वितीय पुत्र के रूप में जन्मे मोती बीए ने 1934 में हाईस्कूल, 1936 में इंटर व 1939 में हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से स्नातक की परीक्षा पास की। सन् 1939 से 1943 तक काशी के हिन्दी दैनिक 'अग्रगामी' व पटना के हिन्दी दैनिक 'आर्यावर्त' जैसे समाचारपत्रों में कार्य के दौरान राष्ट्रीय विचारों एवं उससे जुड़े लेखन के कारण कई बार जेल भी जाना पड़ा।

1935 में प्रथम काव्य कृति 'लतिका' साहित्य समाज को दी। उन्होंने हिन्दी में 29 मौलिक, भोजपुरी में 6 ग्रन्थ, कालिदास के मेघदूत का भोजपुरी अनुवाद तथा शेक्सपियर के सॉनेट को हिन्दी के सॉनेट (छंद) रूप में लिखा।

भोजपुरी की लय को उसकी वास्तविक पहचान के रूप में स्थापित करने वाले मोती बीए ने भोजपुरी की लय को बारीकी से पकड़ा और उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी। दिल को छू लेने वाली उनकी रचनाएँ फिजाओं में तैर रही हैं। उनके 'तनी औरी दौर हरिना पा जइबा किनारा', 'असों आइल महुआ बारी में बहार सजनी' जैसे गीत जन-जन की जुबान पर हैं। फिल्मों में भोजपुरी गीतों का प्रवेश मोती बीए के माध्यम से ही हुआ था।

भोजपुरी सिनेमा को एक मुकाम तक ले जानेवाले मोती बीए ने 1944 में पंचोली आर्टस् पिक्चर, लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स, बम्बई में बतौर गीतकार दस्तक दी। 1945 तक मुम्बई में पंचोली आर्टस् पिक्चर के तहत बन रही फिल्म कैसे कहूँ तथा सुभद्रा, एक कदम, 'काटे न कटे रे मोरा दिनवा' भोजपुरी गीत फिल्म में खूब चला। इसके बाद 1947 में फिल्म 'साजन' तथा 1948 में बनी दिलीप कुमार और कामिनी कौशल की मशहूर फिल्म 'नदिया के पार' में मोती ने अपने भोजपुरी गीतों का जादू भोजपुरिया इलाके के साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश के अन्य हिस्सों में खूब चलाया। उन्होंने भक्त ध्रुव, सिन्दूर, राम विवाह, सुरेखा हरण, ममता, ठकुराईन, गजब भइले रामा तथा चम्पा चमेली फिल्मों में अपने गीत दिये। मोती बीए ने 1984 में 'गजब भइले रामा' में अभिनय भी किया, जो चर्चा में रहा।

राजेन्द्र अनुरागी नहीं रहे

प्रसिद्ध साहित्यककार, कवि और चिन्तक **श्री राजेन्द्र अनुरागी** का भोपाल में शरीरान्त हो गया। 'शांति के पाँखी', 'सारा विश्व सुने', 'पाँव भर धरती', 'शुतुरमुर्ग प्रसंग', 'बूढ़ी काकी', 'नए मनुष्य का सपना', 'मुसाफिर जाग जरा' आदि उनकी महत्त्वपूर्ण कृतिया हैं।

शायरी के बेताज बादशाह फैजी

मऊ। शेर-ओ-शायरी की दुनिया की अजीम शख्सियत व उर्दु अदब की तहरीक को ऊचाइयों तक पहुँचानेवाले हर दिल अजीज 85 वर्षीय फिजा इब्ने फैजी का 17 जनवरी 2009 को इंतकाल हो गया।

चित्रकार मंजीत बाबा

भारतीय पेंटिंग परिदृश्य में रंगों के साहसिक प्रयोग से क्रान्ति लानेवाले जानेमाने चित्रकार 67 वर्षीय **मंजीत बाबा** का 29 दिसम्बर को निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली के कॉलेज ऑफ आर्ट और एसेक्स स्थित लंदन स्कूल ऑफ प्रिंटिंग से अध्ययन कर फिगरेटिव पेंटिंग की दुनिया में मुकाम हासिल किया। उन्होंने अपनी पेंटिंग और मिनिएचर्स में प्रकृति को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। 'आइस क्रीम' नाम की अनोखी पेंटिंग बनानेवाले बाबा ने चित्रों में सूफी रहस्यवाद व भारतीय पौराणिक कथाओं की जो छाप छोड़ी, वह आतंकवाद की शिकार दुनिया में आज भी प्रासंगिक है। वह पहले चित्रकार थे, जिन्होंने पाश्चात्य कला में खूब इस्तेमाल होने वाले भूरे और धूसर रंगों का वर्चस्व खत्म किया। बाबा ने इनकी जगह लाल और बैंगनी जैसे भारतीय रंगों को चुना। पेंटिंग में उनके योगदान के लिए उन्हें ललित कला अकादमी अवार्ड के साथ-साथ अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

संगीतज्ञ रामाश्रय झा

80 वर्षीय यशस्वी संगीतज्ञ राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित **पं० रामाश्रय झा** 'रामरंग' का 1 जनवरी 2009 को कोलकाता में निधन हो गया। बिहार के मधुबनी जिले में खजुरा गाँव में संगीतकारों के परिवार में 1928 में पैदा हुए रामाश्रय झा ने पाँच साल की उम्र में ही अपने पिता पं० सुखदेव झा एवं चाचा पं० मधुसूदन झा से संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी थी। बाद में उन्होंने इलाहाबाद आकर पं० भोलानाथ भट्ट और बीएन ठकार से भी संगीत की दीक्षा ली। 1960 में वह प्रयाग संगीत समिति से जुड़े और 1968 में संगीत शिक्षक के रूप में उनकी नियुक्ति इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। 1980 में संगीत एवं ललित कला विभाग के अध्यक्ष बनाए गए। 1985 में प्रोफेसर बने, 30 जून 1989 को विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुए। श्री झा ने संगीत रामायण की रचना की, जिसका प्रथम भाग बालकाण्ड प्रकाशित हो चुका है। 'रामरंग' उपनाम से उन्होंने अनेक बंदिशों एवं रागों की रचना भी की।

फक्कड़ बनारसी का निधन

प्रतिष्ठित कवि **दयाशंकर शुक्ल** उर्फ फक्कड़ बनारसी का 15 जनवरी 2009 को उनके विश्वनाथ गली, वाराणसी स्थित आवास पर निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। वे बनारस की काव्य संस्था 'ठलुआ क्लब' से भी जुड़े थे।

पत्रकार विनोद मिश्र का निधन

लगभग 25 साल तक दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक रहे 72 वर्षीय **विनोद मिश्र** का 15 नवम्बर को निधन हो गया। वह निर्भीक, निष्पक्ष और पत्रकारिता के नैतिक मूल्यों में आस्थावान आदर्श सम्पादक थे। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों पर 'इतने निकट, कितने दूर' सहित कई पुस्तकें लिखीं। अध्यात्म और विज्ञान पर चिंतनपरक उनकी पुस्तक 'सनातन पथ' एक उल्लेखनीय कृति है।

सतींद्रनाथ मैत्र

वरिष्ठ लेखक व स्वाधीनता संग्राम सेनानी **सतींद्रनाथ मैत्र** का 23 दिसम्बर को आगरपाड़ा स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। मैत्र बांग्ला के सुपरिचित गद्यकार थे। उनके अनेक वैचारिक निबन्ध आज भी इस विधा के मानक माने जाते हैं।

बालकवि श्री दामोदर अग्रवाल का निधन

अपनी जादुई कविताओं से विचित्र सम्मोहन जगाने वाले सन् 1932 में जन्मे बाल कवि **श्री दामोदर अग्रवाल** का 1 जनवरी 2009 को बंगलौर में स्वर्गवास हो गया।

संगोष्ठी/लोकार्पण

प्रगतिशील परम्परा के पोषक थे पण्डित विद्यानिवास मिश्र

'विद्याश्री न्यास' और भाषा संस्थान उत्तर-प्रदेश की ओर से पाँच दिवसीय भारतीय लेखक शिविर व आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति-संवाद में 14 जनवरी को वाराणसी में साहित्यकारों का संगम हुआ जहाँ साहित्य के साथ गौरवशाली संस्कृति व परम्परा को समृद्ध करने के प्रति पण्डित जी के समर्पण की चर्चा केन्द्र में रही। इस दौरान **कवि श्रीकृष्ण तिवारी को 'लोककवि सम्मान' से सम्मानित किया गया।**

शुभारम्भ समारोह के मुख्य अतिथि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० अवध राम ने आचार्य विद्यानिवास मिश्र को साहित्य और भाषा-विज्ञान का मर्मज्ञ बताते हुए कहा कि उनकी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि सामाजिक चेतना को जागृत करनेवाली थी। लखनऊ के विख्यात व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि पण्डितजी ने अपनी गौरवशाली संस्कृति व परम्परा को समृद्ध किया। वे प्रगतिशील परम्परा के पोषक थे। 'संस्कृति' उनके जीवन-दर्शन में गहराई से समाई थी।

प्रथम सत्र में आचार्य विद्यानिवास स्मृति-संवाद का आयोजन किया गया।

दूसरे दिन भाषा, निबन्ध, साहित्यरचना के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई।

द्वितीय सत्र का विषय साहित्य का प्रयोजन व लोक का स्वर था

तृतीय सत्र में आचार्य विद्यानिवास मिश्र के सृजनात्मक साहित्य पर चर्चा हुई।

तीसरे दिन भाषा, निबन्ध, साहित्य, रचना, हृदय-संवाद, रसबोध, महाकाव्य-विमर्श चर्चा के केन्द्र में रहे।

चौथे दिन का विषय था 'भारतीय परम्परा और आधुनिक दृष्टि'।

अन्तिम दिन स्मृति-संवाद के समापन समारोह के मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह थे। प्रो० सिंह ने साहित्य के संवर्द्धन व उन्नयन में पं० विद्यानिवास मिश्र के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि वे विकास को प्राथमिकता देते थे, किन्तु रूढ़िवादी परम्परा को देश और समाज के लिए घातक मानते थे।

सभी को बहुत याद आए डॉ० सम्पूर्णानन्द

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी में डॉ० सम्पूर्णानन्द की जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर संगोष्ठी भी हुई। अध्यक्षता करते हुए डॉ० गिरीशचन्द्र चौधरी ने कहा कि उनके विचारों का अनुसरण ही समय की माँग है। डॉ० सम्पूर्णानन्द ने भारत की सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता के सूत्रों का चिन्तन-मनन करते हुए समाज को दिशा दी। धर्मशील चतुर्वेदी ने कहा कि भले ही उन्होंने आर्थिक अभाव झेला हो, मगर वे अतिसम्पन्न व्यक्ति थे, क्योंकि सम्पन्नता तो वास्तव में ज्ञान की होती है। डॉ० शितिकंठ मिश्र ने कहा कि उनके आदर्शों व चारित्रिक गुणों से प्रेरणा लेकर हम अपने वर्तमान को संवार सकते हैं।

'रेत में आकृति की खोज'

वाराणसी। 18 जनवरी को एक समारोह में **युवा कवि श्रीप्रकाश शुक्ल** के रचना-संग्रह 'रेत में आकृति की खोज' का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर प्रो० रामकीर्ति शुक्ल ने कहा कि— युवा कवि ने कविताओं में निर्जीव के भीतर सजीवता की तलाश की है और इसके बहाने कविताओं का अपना व्यापक संसार रचा है। इसमें रेत को भी जीवन देने की कोशिश है। मुख्य अतिथि प्रो० अजय तिवारी ने कहा कि इतने क्रूर समय में जो कि उपभोक्तावाद का दौर है, इसमें संवेदनशीलता की तलाश की रचनात्मक कोशिश है जो कविता को कला माध्यम से जोड़ती है। संकलित कविताओं से पता चलता है कि यह रेत में मनुष्य का हस्तक्षेप है, जिसके बहाने कविता के भाव-बोध का विस्तार हुआ है। यह उत्साहजनक है कि समकालीन हिन्दी कविता में दार्शनिकता का प्रवेश इधर पहली बार हुआ है जो मनुष्य के पक्ष में है। कवि मदन कश्यप ने कहा कि कविताओं में लोकधर्मिता के पर्याप्त तत्त्व हैं। ऐसे समय में जब हिन्दी कविता मध्यवर्गीय संवेदना की जकड़ में फँस गयी है, कविताओं में उपेक्षितों के सौन्दर्यशास्त्र की तलाश की कोशिश है। प्रो० बलराज पाण्डेय ने कहा कि कविताओं के बहाने रेत पर जीवन सम्भव हुआ है।

हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय ईटानगर में त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली और हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 24-26 नवम्बर, 2008 को राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर के सम्मेलन भवन (कॉन्फ्रेंस हॉल) में 'मानविकी/समाज विज्ञान विषयों में तकनीकी शब्द निर्माण (वैज्ञानिक लेखन के विशेष सन्दर्भ में)' विषय पर एक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चार शैक्षणिक सत्रों का आयोजन हुआ जिसमें भारत भर से आये हुए लगभग चालीस से अधिक विद्वानों ने हिस्सा लिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन-सत्र में विषय-प्रस्तावना करते हुए राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० नन्द किशोर पाण्डेय ने कहा कि तकनीकी शब्दों के निर्माण से ज्यादा बड़ी चुनौती उसकी स्वीकार्यता की है। वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी की चली आँधी के बीच इन शब्दों को जनग्राह्य बनाना एक जटिल समस्या है। छोटी-छोटी अस्मिताओं से भारतीयता नामक एक बड़ी अस्मिता के निर्माण की बात करते हुए उन्होंने पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया में किसी भी भारतीय भाषा के उपेक्षित न रह जाने के प्रति आयोग को सचेत किया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर के कुलपति प्रो० के०सी० बेलियप्पा ने आयोग द्वारा तकनीकी शब्दों के निर्माण द्वारा भारतीय भाषाओं के विकास में किये जाने वाले प्रयासों की सराहना की। सत्र के विशिष्ट अतिथि अरुणाचल जनजातीय संस्थान के निदेशक और हिन्दी प्रेमी प्रो० तामो मिबाङ ने हिन्दी को भारतीय ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की बात की। राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० दीपक पाण्डेय ने अपने भाषण में हिन्दी विभाग के इस प्रयास की सराहना की और आयोग द्वारा तकनीकी शब्दों पर कार्यशाला के आयोजन के लिए इस दूरवर्ती इलाके के चयन के लिए बधाई दी। इस सम्पूर्ण आयोजन के संयोजक प्रो० नन्दकिशोर पाण्डेय थे।

विश्वग्राम समाज, संस्कृति और साहित्य

चारुतर विद्यामण्डल संचालित नलिनी अरविन्द एण्ड टी०वी० पटेल आर्ट्स कॉलेज तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित 'विश्वग्राम : समाज, संस्कृति और साहित्य' द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० वी०जी० पटेल की अध्यक्षता में कार्यारम्भ हुआ। हिन्दी के मार्क्सवादी समीक्षक प्रो० शिवकुमार मिश्र ने विश्वग्राम और वैश्वीकरण जैसे मुखौटों के भीतर छिपे साम्राज्यवाद के खूँखार चेहरे को स्पष्ट किया। सत्राध्यक्ष डॉ० वी०जी० पटेल ने साहित्य और विज्ञान के अंत:सम्बन्धों को प्रस्तुत किया।

तेलुगु की प्राचीनता

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी, हैदराबाद में मनाये गये 'हिन्दी दिवस' के सन्दर्भ में 'तेलुगु ही प्राचीन है' (मूल : डॉ० जी०वी० पूर्णचन्द्र, अनुवाद : डॉ० वेन्ना वल्लभराव) ग्रन्थ का विमोचन हुआ। हाल में तमिल एवं संस्कृत भाषाओं ने क्लासिकल भाषाओं के रूप में केन्द्र सरकार की मान्यता प्राप्त कर ली है। उसी प्रकार, तेलुगु को भी क्लासिकल भाषा के रूप में केन्द्र सरकार की मान्यता दिलाने की कोशिशों को पुष्टि देते हुए तेलुगु की प्राचीनता को लेकर कई ऐतिहासिक आधारों सहित डॉ० जी०वी० पूर्णचन्द्र ने तेलुगु में अनेक निबन्ध लिखे। इन सारे निबन्धों को 'तेलुगे प्राचीनम्' नाम से पुस्तक का रूप दिया गया। यह ग्रन्थ घोषित करता है कि द्रविड भाषा

का मतलब सिर्फ तमिल नहीं है तथा तमिल जितनी प्राचीन बतायी जा रही है, तेलुगु भी उतनी ही प्राचीन या उससे भी प्राचीन भाषा है।

व्याख्यान समारोह

हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी के सभाकक्ष में आयोजित भारतीय जीवन-मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था 'विश्वंभरा' के छठे वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ० जगदीश प्रसाद डिमरी ने 'संस्कृति और संस्कृत' विषय पर 'विश्वम्भरा स्थापना दिवस व्याख्यान' दिया। संस्था के मानद मुख्य संरक्षक पद्मभूषण डॉ० सी० नारायण रेड्डी उपस्थित थे।

स्वर्ण जयंती समारोह

लेखिका संघ के स्वर्ण जयंती समारोह पर साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का विषय था—'सामाजिक चेतना में लेखिकाओं की भूमिका'। समारम्भ सत्र में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ० गिरिजा व्यास मुख्य अतिथि थीं। प्रथम सत्र का विषय था 'हर पग साथ-साथ' (लिंग भेद मिटाना)। दूसरे सत्र का विषय था—'बंद खिड़की खोलेगी, अब कुछ बोलेगी' (अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता), जिसका विषय-प्रवर्तन डॉ० मंजु गुप्ता ने किया। तृतीय सत्र का विषय था 'चकाचौंध भरी दुनिया' (विज्ञापन, पत्रकारिता, चलचित्र आदि)। इस सत्र के मुख्य अतिथि थे वरिष्ठ प्रकाशक श्री दीनानाथ मल्होत्रा तथा अध्यक्ष थीं डॉ० रंजना कुमारी।

सागर विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती

डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में आयोजित संगोष्ठी का विषय-प्रवर्तन करते हुए भारतीय कला संस्थान, नई दिल्ली के प्रो० जी०एल० बादाम ने कहा कि पुरातत्त्व में सभी विज्ञानों का समावेश है। विज्ञान का हर पहलू पुरातत्त्व से आकर जुड़ता है। जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय में 'भारत में पुरातत्त्व अनुसंधान की नूतन प्रवृत्तियाँ' विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकन्टक के कुलपति प्रोफेसर सी०डी० सिंह ने कहा कि पुरातत्त्व निश्चित विज्ञान है। शैलांशों का अध्ययन, ग्लोबल साइड सबके साथ कुछ विज्ञान, कुछ कम्प्यूटर, कुछ नई तकनीकों का अध्ययन करना पड़ेगा।

कविवर बच्चनजी की 101वीं जयंती

कीर्तिशेष डॉ० हरिवंश राय बच्चन की 101वीं जयंती 28 दिसम्बर को मुम्बई में मनाई गई। अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने 'मधुशाला' के अमर रचनाकार के काव्यावदान पर प्रकाश डाला और कहा कि बच्चनजी ने अपनी रसवंती कविता के बारे में सही कहा था कि 'कभी न कण-भर खाली होगा, लाख पियें दो लाख पियें; पाठकगण हैं पीने वाले, पुस्तक मेरी मधुशाला।'

14 पुस्तकों का विमोचन

वाराणसी। सारनाथस्थित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान में दलाई लामा के हाथों संस्थान की 14 पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। इसमें से दस पुस्तकें संस्थान द्वारा प्रकाशित हैं जबकि चार पुस्तकों के लेखक तो संस्थान के ही हैं लेकिन प्रकाशक बाहरी हैं।

'दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन'

साहित्य आकादमी, नई दिल्ली और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 28 दिसम्बर को दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के सभा कक्ष में साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित और डॉ० परमानन्द पांचाल द्वारा चयनित एवं सम्पादित ग्रन्थ 'दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन' का लोकार्पण दक्खिनी साहित्य की प्रख्यात लेखिका डॉ० सईदा जाफ़र ने किया। उन्होंने दक्खिनी साहित्य को भारतीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग बताते हुए कहा कि दक्खिनी की विशेषता राष्ट्रीय एकता, भ्रातृत्व की भावना और देशभक्ति के स्तरों में निहित है। उन्होंने लोकार्पित कृति को दक्खिनी के श्रेष्ठ रचनाकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का गुलदस्ता बताते हुए सम्पादक को बधाई दी और उनसे अनुरोध किया कि वे दक्खिनी के गद्य का भी संचयन करें।

डॉ० पांचाल ने कहा कि दक्खिनी साहित्य हिन्दी और उर्दू के आरम्भिक विकास का साहित्य है। हिन्दी के विद्वानों ने दक्खिनी भाषा साहित्य की जो अनदेखी की है वह अक्षम्य है। उन्होंने कहा कि इस दिशा पर कार्य के लिए भारतीयों को यूरोप के विद्वानों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने ही रुचिपूर्वक इस साहित्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। दक्खिनी को आज की मानक हिन्दी का मूल घोषित करते हुए डॉ० परमानन्द पांचाल ने हिन्दी विद्वानों का आह्वान किया कि वे फारसी लिपि में उपलब्ध समस्त दक्खिनी साहित्य को नागरी में लिपिबद्ध करें और उच्चारण की दृष्टि से इसका पाठ शोधन करें क्योंकि यह हमारी मिली-जुली साझी तहजीब का हिस्सा है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि दक्खिनी के कवियों और लेखकों ने इसे कभी उर्दू नहीं कहा बल्कि हिन्दवी और दक्खिनी ही कहा था।

'बाल साहित्य एवं नैतिक मूल्य' पर संगोष्ठी

हिन्दी संस्थान, लखनऊ में 'बाल साहित्य एवं नैतिक मूल्य' विषय पर संगोष्ठी में सूर्यकुमार पाण्डेय ने कहा कि देश में भारी भरकम साहित्य पर बाल साहित्य दबता चला जा रहा है। इस कारण सभी को आज की जरूरत के रूप में बाल साहित्य को लेना होगा। पत्रकार नवीन जोशी ने नैतिक मूल्यों को केवल बच्चों के लिए छोड़ देने के बजाय स्वयं नैतिकता के रास्ते पर चलने की बात कही।

रामशरण जोशी की तीन पुस्तकें

साहित्य अकादेमी के सभागार में आयोजित समारोह में वरिष्ठ पत्रकार रामशरण जोशी की तीन पुस्तकों—'आदमी, बैल और सपने', 'हस्तक्षेप' और 'चुनौतियों का चक्रव्यूह' का लोकार्पण आलोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने किया। उन्होंने कहा कि आज हिन्दी व समाजविज्ञान का रिश्ता बेहद कमजोर हो गया है। हिन्दुस्तान के समाजविज्ञानी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने की तमन्ना में हिन्दी की बजाय अंग्रेजी में लिखना पसन्द करते हैं, पर रामशरण जोशी जैसे समाज-विज्ञानी आज हिन्दी में इसका अपवाद हैं।

'निराला की गली में' का लोकार्पण

साहित्य अकादमी सभागार में 'शब्द सेतु' और इंडियन सोसाइटी ऑफ ऑथर्स के कार्यक्रम में डॉ० हरीश नवल की पुस्तक 'निराला की गली' का लोकार्पण हुआ।

मॉरीशसीय लेखक का सम्मान

मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य समिति (इंदौर) ने मॉरीशसीय लेखक/कवि श्री राज हीरामन की दो पुस्तकों कहानी-संग्रह 'सेवा आश्रम' तथा लघुकथा-संग्रह 'कथा संवाद' का लोकार्पण किया। समिति के प्रधानमंत्री श्री बसंत सिंह जौहरी ने राज हीरामन को शॉल व श्रीफल भेंट कर स्वागत किया।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

तदपि कहे बिनु रहा न कोई : लेखक : डॉ० त्रिभुवन ओझा, प्रकाशक : कला प्रकाशन, ए-ब्लॉक, डी/94, सोनारी, जमशेदपुर 831011, मूल्य : 200/- रु०

विश्रान्ति के क्षणों में आत्मस्थ मन की रचनाशील अभिव्यक्ति है 'तदपि कहे बिनु रहा न कोई'। लेखक ने विभिन्न विषयों पर गम्भीर चिन्तन किया है, उन पर आलेख लिखे हैं और उसे एक क्रम दिया है। धर्म, अध्यात्म, उपनिषद्, संस्कार, संस्कृति से सम्बद्ध अवधारणाएँ प्रस्तुत करते हुए लेखक ने 'रामचरित मानस' के प्रसंगों और चरितों की स्वानुभूत-अभिव्यक्ति करने का प्रयत्न किया है। लेखक का यह प्रयत्न 'स्वान्तः सुखाय' के साथ-साथ 'सर्वान्तः सुखाय' की दिशा में है अतः उसकी विचारधारा और रचना-प्रवाह में एक सहजता है और यही सहजता इस गम्भीर-कृति को पठनीय बनाती है।

शाकुन्तलं धर्मविज्ञानम् : लेखक : डॉ० रामलखन पाण्डेय, प्रकाशक : हर्षवर्धा प्रकाशन, 5/750ए, विकासखण्ड, गोमती नगर, लखनऊ 226010, मूल्य : 125/-रु०

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित 'धर्मविज्ञान संकाय' में अध्ययन करते हुए 'धर्म विज्ञान' शब्द या पद का अर्थानुसंधान करने का सतत प्रयत्न किया, जिसे उसने बाह्याभ्यंतर-दृष्टि से परखने की चेष्टा भी की। इसी क्रम में लेखक ने धर्मसापेक्ष प्राच्यविद्या और धर्म निरपेक्ष पाश्चात्य विद्या के मूल अंतर को भी स्पष्टतः समझा। धर्मविज्ञान की इसी विवेचना के आधार पर महाकवि कालिदास की नाट्यकृति 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के 'काव्यधर्म' का समीक्षण लेखक का उद्देश्य है। 'शाकुन्तल' के सातों अंकों पर ग्रन्थ के विभिन्न-अध्यायों में काव्य धर्म की दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः लेखक ने अपने अध्ययन, चिन्तन और अनुसंधान के आधार पर 'शाकुन्तल' की 'परिणाम रमणीय' समीक्षा की है, जो संस्कृत-अनुसंधान में एक अभिनव प्रयास है।

बहीखाता (काव्यसंग्रह) : कवि : प्रवीणकुमार 'फ़कीर', प्रकाशक : वर्मा प्रकाशन, हाँसी (हिसार) 125033, मूल्य : 90/- रु०

अपने ही सामाजिक परिवेश के विभिन्न सारों में गुँथा मानव-जीवन, अपने अनुभवों को सँजो कर आदिकाल से प्रवाहित शाश्वत-प्रवाह में बहता चला आ रहा है। इसी प्रवाह में हमारा वर्तमान-परिवेश है, उसकी टूटन है, ध्वंस है, बदलते प्रतिमानों और जीवन-मूल्यों का संघर्ष है जिनके बीच कवि ने आम-आदमी के दर्द को रेखांकित करने की कोशिश की है। इसी दर्द के साथ कवि-मन में आलोड़ित ज्वार-भाटे का हिसाब है 'बहीखाता' की कविताएँ। कवि के शब्दों में ''मैंने वही किया जो मेरी आत्मा ने कहा/उसके बदले जो मुझे मिला/अभाव, पत्नी का आक्रोश/बच्चों की शिकायत/सब स्वीकार है/स्वीकार है।''

चेतना के द्वार : डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी, प्रकाशक : उमेश प्रकाशन, 100 लूकरगंज, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008, मूल्य 100/-रु०

'चेतना के द्वार' डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी की दसवीं काव्य-कृति है। इसमें इनकी 624 द्विपदियाँ संकलित हैं। प्रत्येक द्विपदी दो पंक्तियों की कविता है, जिसमें मात्रानुशासन का पालन हुआ है। इससे द्विपदियों में गेयता विद्यमान है। हर द्विपदी किसी विचार या भाव की सहज अभिव्यक्ति है तथा अपने में पूर्ण है। साधारण भाषा में, बिना बनावट के, जीवन के विविध बहुल पहलुओं का इनमें उद्घाटन हुआ है। ये संप्रेष्य हैं, कठिन या दुर्बोध नहीं। आशा है, पाठक इन्हें चाव से पढ़ेंगे। बानगी के तौर पर—

1. इस अमराई का पेड़-पेड़,
   बचपन में मेरा सहचर था।
2. अभिलाषाओं के अर्णव में,
   खेऊँ कैसे मन की नौका?
3. जो तूफानों में गिरा नहीं,
   हवा का झोंका गिरा गया।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **फरवरी 2009** **अंक : 2**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**